पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्ल्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२१, अंकः-०१, जुलाई, सन्-२०१८, सं०-२०७५ वि०, दयानंदाब्द १९४, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,११९; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

गीतकार नीरज के महाप्रयाण पर विशेष

गद्य जहाँ असमर्थ है, कविता वहाँ जन्म लेती है! जहाँ कविता भी लाचार है, वहाँ गीत आता है!!

युवावस्था में ही नीरज ने समझ लिया था सौन्दर्य, प्रेम और मृत्यु का अन्त:संबन्ध

मेरे कुछ मित्रों का आग्रह है कि मैं अपनी कविता की व्याख्या करूँ। जब मुझसे आग्रह किया गया तब मैंने स्वीकार कर लिया, पर अब जब व्याख्या करने बैठा हूँ तो पाता हूँ कि असमर्थ हूँ। मेरे विचार से कविता की और विशेष रूप से गीत की व्याख्या नहीं हो सकती। वह क्षण जो कण्ठ को स्वर और अधरों को वाणी दे जाता है, कुछ ऐसा अचिन्त्य, अनुपम और अनमोल है कि पकड़ में ही नहीं आता। उसे पकड़ने के लिए तो स्वयं खो जाना पड़ता है और जहाँ खोकर पाना हो वहाँ व्याख्या कैसे की जाय?

गद्य जहाँ असमर्थ है, वहाँ कविता जन्म लेती है और जहाँ कविता भी लाचार है, वहाँ गीत आता है। अनेकत्व से एकत्व की ओर जाना कविता करना है और एकत्व से अनेकत्व की ओर जाना तर्क करना है। व्याख्या तर्क ही है।

तर्क का अर्थ है काटना-टुकड़े करना। किन्तु कविता काटती नहीं, तोड़ती नहीं, जोड़ती है। अभेद में भेद के ज्ञान की शर्त है तर्क, भेद में अभेद की सृष्टि का भाव है काव्य। तर्क द्वारा जो सत्य प्राप्त होता है, वह सत्य तो हो सकता है, किन्तु सुन्दर नहीं और जो सुन्दर नहीं है, वह आनन्द तो कभी भी नहीं बन सकता। किन्तु काव्य में सुन्दर के बिना सत्य की गति नहीं। इसीलिए साहित्य के क्षेत्र में जब हम 'सत्यं' शब्द का प्रयोग करते हैं, तब उसका योग 'शिवं' और 'सुन्दरं' से अवश्य करा देते हैं। हमें अकेला सत्य अभीष्ट नहीं, सत्य का गुण भी हमारा इष्ट है, इसीलिए हम कहते हैं- 'सत्यं' 'शिवं', 'सुन्दरम्'।

एक बात और भी है अपनी कविता की व्याख्या करने का अर्थ है अपनी व्याख्या करना- उस चेतना की व्याख्या करना, जिसके हम कवि हैं। वह चेतना अखंड है। अखंड है इसीलिए आनन्द स्वरूप है। खण्डित होने पर वह आनन्द नहीं रह पाती। काव्य भी आनन्द है- आनन्द से भी एक और पग आगे की वस्तु-स्वर्गानन्द सहोदर और उसका आनन्द भी उसकी अखण्डता में ही है; खण्डित होने पर तो वह आनन्द न रहकर निरानन्द हो जायेगी। इसीलिए मैं कहता हूँ कि काव्य की व्याख्या नहीं की जा सकती।

पर हाँ, जिस प्रकार कुसुम के सुवास की व्याख्या न होकर उसकी पँखुरियों के रूप-रंग (बाह्यावरण) के विषय में कुछ बताया जा सकता है, उसी प्रकार काव्य के भाव की मीमांसा न सम्भव होकर भी उसके साधनों और उसके कारणों के विषय में कुछ संकेत दिये जा सकते हैं।

जीवन के सत्ताइस पृष्ठ पढ़ने के बाद मेरी अनुभूति अब तक केवल तीन सत्य प्राप्त कर सकी है-सौंदर्य, प्रेम और मृत्यु। इनका अर्थ मेरी कविता में क्रमशः चिति (सौन्दर्य), गति (प्रेम) और यति (मृत्यु) है। अपने पाठकों और आलोचकों की सुविधा के लिए मैं प्रत्येक की अलग-अलग व्याख्या करूँगा।

सौन्दर्य-

सौन्दर्य का अर्थ मेरी दृष्टि में संतुलन (Harmony), क्रम (Order), आकर्षण (Gravitation or Attraction), स्थिति-कारण (Force of existance), और सब मिलाकर चिति शक्ति है। उदाहरणार्थ मान लीजिये, आपके सम्मुख चार व्यक्ति खड़े हैं। आप उन चार व्यक्तियों में से केवल एक को सुंदर बतलाते हैं शेष तीनों को नहीं। अब प्रश्न उठता है कि आपके पास वह कौन-सा पैमाना है जिससे नाप-तोल कर आपने चार व्यक्तियों में से केवल एक को ही सुन्दर ठहराया। आप कहते हैं-पहले व्यक्ति की न तो मुखाकृति ही सुन्दर है और न उसका शरीर ही सुडौल है, फिर उसे सुन्दर कैसे कह सकते हैं? दूसरे व्यक्ति को आप असुन्दर ठहरा देते हैं उसकी मुखाकृति (नाक, कान, आँख, ओठ आदि) तो सुन्दर है, पर उसका शरीर सुडौल नहीं। तीसरे व्यक्ति के लिए आप कहते हैं उसका शरीर तो सुडौल है, पर उसकी मुखाकृति असुन्दर है-इसलिए उसे भी सुन्दर नहीं कहा जा सकता। चौथा व्यक्ति जिसे आपने सुन्दर बतलाया है, आप

कहते हैं कि नख से शिख तक उसका प्रत्येक शरीरावयव निर्दोष है। उसके सम्पूर्ण अंगों में एक समुचित अनुपात (Proportion)है। न उसकी नाक मोटी है न आँख छोटी। न उसके हाथ मोटे हैं और न पाँव पतले अर्थात् उसका सम्पूर्ण शरीर सन्तुलित है और इसीलिए वह सुन्दर है। इसी दृष्टि से यदि आप अपनी ओर दृष्टिपात करें, तो आपको पता चलेगा कि स्वयं आपके शरीर में भी पंचतत्वों का एक (Proportion)है, जिसके कारण आपकी स्थिति है यानी आप जीवित हैं। जिस दिन यह अनुपात क्षीण हो जाता है, उसी दिन मृत्यु हो जाती है। उर्दू के महाकवि चकबस्त ने इसी सत्य को इस प्रकार कहा है-

जिन्दगी क्या है अनासिर में जहूरे तरतीब,
मौत क्या है-इन्हीं अजजां का परीशां होना।

जहाँ सन्तुलन है, अनुपात है वहाँ (Order) है। यूँ कहें तो अधिक उपयुक्त होगा कि क्रम ही सन्तुलन है-Order is proportion. सृष्टि में भी एक क्रम है। प्रत्येक गतिशील तत्व में एक क्रम होता है। चलती हुई रेलगाड़ी में भी एक लय होती है। सम्पूर्ण विश्व ही एक लय है। हजारों-लाखों वर्ष हो गये, सूरज सदा से सुबह ही निकला और चन्द्रमा रात को ही उदय होता है। न तो किसी ने (केवल कवि को छोड़कर) रात में सूरज देखा और न किसी ने दिन में चाँद। शताब्दियों की माँग का सिन्दूर झर गया, पर सृष्टि के इस क्रम में रंगमात्र भी अन्तर नहीं आया। और इस सृष्टि के सम्राट् विष्णु की ओर भी जरा देखिये। इस संसार के पलन का भार उसे मिला है, पर वह आदिकाल से कमल के पत्ते पर शेष को शैय्या बनाये हुए क्षीरसागर में शयन कर रहा है। आश्चर्य की बात है कि वह राजा जिस पर इतने विशाल साम्राज्य के पालन और संरक्षण का भार है इसप्रकार निश्चेष्ट होकर लेटा है। पर इसमें अचरज की बात कुछ भी नहीं। जिसके राज्य में सब कुछ अपने आप क्रम से संचालित होता रहता है, उस राज्य के राजा को दौड़ धूप की क्या आवश्यकता-वह तो ऐसे निश्चिन्त होकर सोता है जैसे क्षीरसागर में विष्णु। तो इस सृष्टि में एक क्रम है, सन्तुलन है, जिसका नाम है, सौन्दर्य और जो सम्पूर्ण विश्व की स्थिति का कारण है।

दूसरी तरह से सोचिये। सुन्दर वस्तु की ओर आप देखते हैं तो वह आपको अपनी ओर आकर्षित करती है। आकर्षण चेतन का गुण है यानी जहाँ सौन्दर्य है, वहाँ चेतना है, जीवन है। तो सौन्दर्य एक चेतन आकर्षण-शक्ति है। वैज्ञानिक दृष्टि से देखिये तो पता चलेगा कि सम्पूर्ण विश्व की स्थिति का कारण भी आकर्षण है। ये धरती, आकाश, सूरज, चाँद, सितारे, ग्रह, उपग्रह सब एक आकर्षण-डोर से बँधे घूम रहे हैं-

एक ही कील पर घूमती है धरा,
एक ही डोर से बस बँधा है गगन,
एक ही साँस में जिन्दगी कैद है,
एक ही तार से बुन गया है कफन।

आकर्षण में जिस दिन विकर्षण होता है, उसी दिन प्रलय हो जाती है। अर्थात् आकर्षण (सौन्दर्य) ही स्थिति है।

हाँ, तो मैं सौन्दर्य को सृष्टि की स्थिति का कारण चित्त शक्ति मानता हूँ। जिस दिन सौन्दर्य इस मिट्टी को स्पर्श करता है उसी दिन चेतना (प्राण अथवा ताप) का जन्म होता है। यह एक विज्ञान सम्मत सत्य है कि दो वस्तुओं के स्पर्श या संघर्ष से ताप (Heat) की उत्पत्ति होती है। मेरे गीतों में कई स्थानों पर इसकी प्रतिध्वनि मिलेगी, जैसे इन पंक्तियों में-

(१) एक ऐसी हँसी हँस पड़ी धूल यह
लाश इन्सान की मुस्कराने लगी
तान ऐसी किसी ने कहीं छेड़ दी
आँख रोती हुई गीत गाने लगी।

अथवा

(२) एक नाजुक किरन छू गई इस तरह
खुद-बखुद प्राण का दीप जलने लगा
एक आवाज आई किसी ओर से
हर मुसाफिर बिना पाँव चलने लगा।

अथवा

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विनय पीयूष

हवि दें हम !

मा मा हिꣳसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवꣳसत्यशर्मा व्यानट्।
यश्चापश्चन्द्राः प्रथमो जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु. : 12/102)

रचकर जगत सत्यधर्मा जो व्याप्त सभी में,
जल में, थल में, पवन, चन्द्र, दिनकर, पृथ्वी में,
जो कुसंग की हिंसा से नित हमें बचाता,
सुख स्वरूप उस प्रभु को अपना हवि दें हम!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

आर्य्य लोक वार्ता : पत्र नहीं स्वाध्याय है - एक नया अध्याय है।

सम्पादकीय

अयोध्या में वेदभाष्य स्मारक : आर्य गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा

आज जबकि मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या के सरयूबाग क्षेत्र में उस पुण्यस्थली पर ऋग्वेद भाष्य का भव्य स्मारक बनने जा रहा है; जहाँ बैठकर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भाद्रपद १४, संवत् १९३३ विक्रमी (२०.०८.१८७६ ई.) को चौधरी गुरुचरणलाल के मंदिर में बैठकर 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' की रचना प्रारंभ की थी। राम और ऋग्वेद के अन्तःसंबन्धों से जनसामान्य विशेषतया धर्मप्रवण हिन्दू जनता को अवगत कराना आवश्यक हो जाता है। रामचरितमानस के प्रणेता गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज राम और ऋग्वेद के अन्तःसंबन्धों से भली प्रकार परिचित थे, इसीलिए वे मानस के बालकांड में यह उल्लेख करते हैं कि-

जा की सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ़ यह कौतुक भारी।।

श्रीराम ने यदि ऋग्वेद सहित चारों वेदों को सम्यक् रूपेण आयत्त न किया होता तो ऋष्यमूक पर्वत पर श्री हनुमान का वार्तालाप सुनकर वे यह क्यों कहते-

नानृग्वेद विनीतस्य ना यजुर्वेद धारिणः
न सामवेद विदुषः शक्यमेव विभाषितुम्।

(जिसने ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का अध्ययन न किया हो, वह ऐसी वाणी का उच्चारण नहीं कर सकता)

गोस्वामी जी के अनुसार किशोरावस्था में मुनिवर विश्वामित्र के गुरुकुल आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने के बाद जब धनुषयज्ञ देखने की लालसा से श्रीराम लक्ष्मण के साथ आगे बढ़े तो पहला कार्य जो उन्होंने किया वह था- एक सुनसान निर्जन में निर्वासित अभिशप्त पाषाणशिला बनी नारी का जीवनोद्धार। गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या को श्रीराम ने नया जीवन ही नहीं दिया, वरन् गौतम ऋषि को भी सद्ज्ञान देकर उसे अपने पति के पास भेजा-"गै पतिलोक अनंद भरी"। गोस्वामी जी ने अपने काव्य को नारी-उद्धार तक सीमित रखा, उन्होंने अहिल्या के साथ हुई अमानवीय घटनाक्रम की कथा का वर्णन नहीं किया, तो भी समाज में शताब्दियों तक अहिल्या अभिशप्त, गौतम विक्षुब्ध और इन्द्र अमर्यादित आचरण करने वाले माने जाते रहे।

वेदमार्ग के पथिक श्रीराम की यदि यह घोषण थी-'रामो द्विर्नाभियाषते' तो स्वामी दयानन्द सरस्वती की भी प्रतिज्ञा थी- 'न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'। स्वामी जी को वेदभाष्य के दौरान अहिल्या-इन्द्र-गौतम की इस कथा की विवेचना करनी पड़ी तो उन्हें यह ज्ञात हुआ कि यह कथा पूरी तरह मिथ्या, मनगढन्त, काल्पनिक है तथा इसे महाभारत के पश्चात् उस युग में जब वेद विद्या विलुप्त हो गई थी, कुत्सित मनोवृत्ति वाले पंडितों ने ब्रह्मवैवर्त तथा श्रीमद्भागवतादि पुराणों में डाल दिया था (यहाँ तक कि वाल्मीकि रामायण में भी प्रक्षेपित किया, जिसकी आज विद्वानों ने पहचान कर ली है) जिसका मूल उद्देश्य हिन्दुओं के मान्य देवताओं, ऋषियों और नारियों को लांछित करना तथा हिन्दू धर्म को नीचा दिखाना था।

पुराणों में वर्णित इस लज्जाजनक कथा के अनुसार देवराज इन्द्र ने गौतम ऋषि का वेश धारण कर छलपूर्वक ऋषि की पत्नी अहिल्या का शीलहरण किया; अचानक रंगेहाथों पकड़े जाने पर गौतम ऋषि ने अपनी पत्नी को पाषाण शिला बन जाने का शाप दिया, तथा इन्द्र को भी ऐसा शाप दिया- जो अत्यन्त लज्जाजनक है। ऋषि पत्नी ने दुखी होकर, जब शाप मोचन का उपाय पूछा तो ऋषि ने कहा- श्रीराम के चरण स्पर्श से तुम्हारा उद्धार होगा।

वेदभाष्य के उपक्रम में दयानन्द ने यह अनुभव किया कि अनेक कथाएँ ऐसी गढ़ी गईं हैं और लोकप्रचलित हो गईं हैं- जिनका जन्म वेदों तथा वेदों के व्याख्या ग्रन्थों- ब्राह्मण, निरुक्त आदि में आये हुए रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा जैसे अलंकारों के न समझ पाने के कारण हुआ। इन्द्र-वृत्रासुर, प्रजापति दुहिता, देवासुर संग्राम तथा अहल्या गौतम ऐसे ही प्रसंग हैं। अहिल्या, गौतम इन्द्र को लेकर जो लज्जाजनक कथा प्रचलित हुई- वह भी ऐसी ही है।

वेदों में बार बार प्रकृति के रहस्यों को स्पष्ट करने के लिए नैसर्गिक सौन्दर्य का चित्रण किया गया है; जिसका मूल उद्देश्य सृष्टि के रचनाकार की अनुभूति कराना होता है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में ग्रन्थप्रामाण्याप्रामाण्यविषयः शीर्षक अध्याय में वेद के व्याख्या ग्रंथों के अनेक उद्धरण प्रस्तुत करते हुए यह स्पष्ट किया है-

"इन्द्रागच्छेति।...गौरावस्कन्दिन्नहस्यायै जारेति। तद्यान्येवास्य चरणानि तैरेवैनमेतत्प्रमोदयिषति।।" (शत.कां.३/अ.३/ब्रा.१/कं.१८)

अहल्या, गौतम, इन्द्र के नाम पर जो कथाएँ गढ़ी गईं; वे सर्वथा मिथ्या हैं। ऐसी कुत्सित घटना कभी घटी ही नहीं। महर्षि स्पष्ट करते हैं-

"सूर्य का नाम इन्द्र, रात्रि का अहल्या तथा चन्द्रमा का गौतम है। इसलिए यह स्त्री-पुरुष का रूपकालंकार बांधा है, कि जैसे स्त्री पुरुष मिलजुल कर रहते हैं, वैसे ही चन्द्रमा और रात्रि भी साथ साथ रहते हैं। चन्द्रमा का नाम गौतम इसलिए है कि वह अत्यंत वेग से चलता है और रात्रि का 'अहल्या' इसलिए कहते हैं कि उसमें दिन लय हो जाता है तथा सूर्य रात्रि को निवृत्त कर देता है, इसलिए उसका 'जार' कहाता है। इस उत्तम रूपकालंकार विद्या को अल्पबुद्धि पुरुषों ने बिगाड़ के सब मनुष्यों में हानिकारक फल धर दिया है। इसलिए सब सज्जन लोग पुराणोक्त मिथ्या कथाओं को मूल से ही त्याग कर दें।" (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पृष्ठ २२०)

ऋग्वेद के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान सूत्रों को पकड़कर त्रेता युग में राम ने अहल्या को दोषमुक्त किया, आधुनिक युग में महर्षि दयानन्द ने ऋग्वेद का भाष्य करते हुए 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का प्रणयन कर गौतम अहल्या इन्द्र संबन्धी मिथ्या प्रवादों को समूल नष्ट करके हिन्दुओं को इस लज्जाजनक प्रसंग से मुक्ति दिलाई, आर्य हिन्दुओं की गौरव गरिमा की पुनः प्रतिष्ठा की और मानवता को शर्मसार होने से बचा लिया।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१८६

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

विद्या अविद्या

(प्रश्न) जैसे समुद्र में मच्छी, कीड़े और आकाश के बीच पक्षी आदि घूमते हैं वैसे ही चिदाकाश ब्रह्म में सब अन्तः करण घूमते हैं। वे स्वयं तो जड़ हैं परन्तु सर्वव्यापक परमात्मा की सत्ता से जैसा कि अग्नि से लोहा; वैसे चेतन हो रहे हैं। जैसे वे चलते फिरते और आकाश तथा ब्रह्म निश्चल हैं वैसे जीव को ब्रह्म मानने में कोई दोष नहीं आता।

(उत्तर) यह भी तुम्हारा दृष्टान्त सत्य नहीं क्योंकि जो सर्वव्यापी ब्रह्म अन्तः करणों में प्रकाशमान होकर जीव होता है तो सर्वज्ञादि गुण उस में होते हैं वा नहीं? जो कहो कि आवरण होने से सर्वज्ञता नहीं होती तो कहो कि ब्रह्म आवृत्त और खण्डित है वा अखण्डित? जो कहो कि अखण्डित है तो बीच में कोई भी पड़दा नहीं डाल सकता। जब पड़दा नहीं तो सर्वज्ञता क्यों नहीं? जो कहो कि अपने स्वरूप को भूलकर अन्तः करण के साथ चलता सा है स्वरूप से नहीं? जब स्वयं नहीं चलता तो अन्तः करण जितना-जितना पूर्व प्राप्त देश छोड़ता और आगे-आगे जहां-जहां सरकता जायेगा वहां-वहां का ब्रह्म भ्रान्त, अज्ञानी हो जायेगा और जितना जितना छूटता जायेगा वहां वहां का ज्ञानी, पवित्र और मुक्त होता जायेगा। इसी प्रकार सर्वत्र सृष्टि के ब्रह्म को अन्तःकरण बिगाड़ा करेंगे और बन्ध मुक्ति भी क्षण-क्षण में हुआ करेगी।

तुम्हारे कहे प्रमाण जो जैसा होता तो किसी जीव को पूर्व देखे सुने का स्मरण न होता क्योंकि जिस ब्रह्म ने देखा वह नहीं रहा इसलिये ब्रह्म जीवन, जीव ब्रह्म एक कभी नहीं होता, सदा पृथक् पृथक् हैं।

(प्रश्न) यह सब अध्यारोपमात्र है अर्थात् अन्य वस्तु में अन्य वस्तु का स्थापन करना अध्यारोप कहाता है। वैसे ही ब्रह्म वस्तु में सब जगत् और इसके व्यवहार का अध्यारोप करने से जिज्ञासु को बोध कराना होता है। वास्तव में सब ब्रह्म ही है।

(प्रश्न) अध्यारोप का करने वाला कौन है?

(उत्तर) जीव।

(प्रश्न) जीव किसको कहते हो?

(उत्तर) अन्तकरणावच्छिन्न चेतन को।

(प्रश्न) अन्तःकरणावछिन्न चेतन दूसरा है व वही ब्रह्म?

(उत्तर) वही ब्रह्म है।

(प्रश्न) तो क्या ब्रह्म ही ने अपने में जगत् को झूठी कल्पना कर ली?

(उत्तर) हो, ब्रह्म की इससे क्या हानि?

(प्रश्न) जो मिथ्या कल्पना करता है क्या वह झूठा नहीं होता?

(उत्तर) नहीं। क्योंकि जो मन, वाणी से कल्पित वा कथित है वह सब झूठा है।

(प्रश्न) फिर मन वाणी से झूठी कल्पना करने और मिथ्या बोलने वाला ब्रह्म कल्पित और मिथ्यावादी हुआ वा नहीं?

(उत्तर) हो, हमको इष्टापत्ति है।

(-क्रमशः)

वेदांजलि

आजीवन आचरणीय चार उत्तम कर्म

❑पं.शिव कुमार शास्त्री,
भू.पू.संसद सदस्य

**स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया
गुप्ता यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।।**

-अथर्व.12/5/3

__शब्दार्थ__- **(स्वधया)** परिश्रमोपार्जित अपने भाग को ही ग्रहण करने से **(परिहिताः)** सबके हितकारी हों। **(श्रद्धया)** सत्यधारण में श्रद्धा से **(पर्यूढाः)** सब ओर से सबको सत्याचरण पर आरूढ़ होने की प्रेरणा करनेवाले **(दीक्षया)** सत्यभाषणादि व्रतों से **(गुप्ताः)** सुरक्षित **(यज्ञे)** विद्वानों के सत्कार, अनेक प्रकार के कला-कौशल और शुभ गुणों के दान में **(प्रतिष्ठिताः)** सब प्रकार स्थित रहनेवाले **(निघनम्)** मृत्युपर्यन्त, जीवन भर [वर्णित गुणों के आधार पर] **(लोकः)** इस लोक में सानन्द रहें।

__व्याख्या__- मंत्र में चार महत्त्वपूर्ण कर्त्तव्यों की ओर मानव-समाज का ध्यान आकृष्ट कर जीवन को सुखी बनाने के लिए मृत्युपर्यन्त उन पर आचारण का परामर्श दिया है। उनमें पहला है-परिश्रम के पश्चात् जो वस्तु आपके हिस्से में आती है, उसे अमृत समझो और उसी को ग्रहण करो। अपने चातुर्य और बल के आधार पर दूसरे के भाग को हड़प करने का यत्न मत करो।

संसार के ज्ञात इतिहास में जितने भी विवाद और युद्ध हुए हैं, वे सब इसी सुनहरे उपदेश की अवहेलना के परिणाम स्वरूप ही हुए हैं। भारत के प्राचीन इतिहास में राम-रावण का युद्ध विख्यात है। कारण यह था कि रावण ने मर्यादा भंग करके राम की पत्नी सीता को अपने अधिकार में रखना चाहा और समझाने पर भी जब कुमार्ग से हटने को उद्यत न हुआ तो परिणाम युद्ध हुआ, जिसमें उस (रावण) का सर्वनाश हो गया। दूसरा उदाहरण महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध है। इस युद्ध का कारण था कि दुर्योधन हस्तिनापुर के समस्त साम्राज्य पर अपना अधिकार रखना चाहता था और अपने चचेरे भाइयों को निर्वाह के योग्य तुच्छ सा भाग देने को भी तैयार न था।

वेद का दूसरा उपदेश है **'श्रद्धया पर्यूढाः'**- 'तुम्हारा प्रत्येक कार्य सत्य की पहचान करके उसके ऊपर आचरण करने का है।' आजकल धार्मिक क्षेत्र में इस श्रद्धा के ऊपर भी बड़ा विवाद है। मुसलमान, ईसाई और पौराणिक लोग श्रद्धा का अभिप्राय समझते हैं कि मजहब में अक्ल को दखल न देना; इनमें तर्क वितर्क करने की आवश्यकता नहीं है; जो कहा जाय, उस पर आँख बन्द करके विश्वास करके मान लेना चाहिए। इस स्थापना के ऊपर प्रत्येक मत में अनेक प्रकार की विचित्र-विचित्र कहानियाँ प्रसिद्ध हैं, किन्तु ये सारी बातें भ्रामक और निरर्थक हैं और श्रद्धा के अपने अर्थ के ही विपरीत हैं। श्रद्धा शब्द 'श्रत्' और 'धा' के योग से बना है। 'श्रत्' का अर्थ है सत्य और 'धा' का अर्थ है धारण करना, अर्थात् पहले परीक्षा करके सत्य को जाने और फिर उसे धारण करो। दोनों ही बातों की अनिवार्यता है। सत्य को बिना जाने कुछ का कुछ समझकर आचरण करने लगो तो वह भी व्यर्थ है। कोई गुंजाफलों को अग्नि समझकर अग्नि जलाना चाहे तो कदापि नहीं जला सकता, क्योंकि वे अग्नि कण हैं ही नहीं, अतः उनसे अग्नि जलाना भी असम्भव है। साथ ही सत्य को जान ले। किन्तु उस पर आचरण न करे, तब भी कुछ बननेवाला नहीं है। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति ने यह जो जान लिया कि शीत-ज्वर की औषध कुनीन है। इसी तथ्य के ऊपर वह भाषण दे कि यह ज्वर कुनीन के सामने कभी ठहर नहीं सकता, किन्तु कुनीन खाए नहीं, तो इस सत्य की केवल जानकारी से उसे कोई लाभ नहीं होगा। लाभ तभी होगा जब जाने हुए सत्य पर आचरण करेगा।

महर्षि दयानन्द ने इस तथ्य को उजागर करके मजहबी दुनिया में एक हलचल पैदा कर दी। आज बुद्धिजीवी लोग चाहे ईसाई, मुसलमान और हिन्दू कोई भी क्यों न हों, या तो अपनी धर्म-पुस्तकों में वर्णित बात की बुद्धिपूर्वक संगति लगाते हैं और यदि यह सम्भव न हो तो उसे अस्वीकार करने में भी उन्हें झिझक नहीं होती।

मंत्र का तीसरा उपदेश है-**'दीक्षया गुप्ताः'**- तुम लोग दीक्षा से सुरक्षित रहनेवाले हों। शिक्षा के दो भेद हैं- एक शिक्षा और दूसरी दीक्षा। शब्दमय ज्ञान का नाम शिक्षा है। वह शब्दमय ज्ञान आचरण के माध्यम से जब हमारे आन्तरिक जीवन का अंग बनता है, तो दीक्षा कहा जाता है, अतः दीक्षा ही तत्त्व की वस्तु है और वह निश्चित रूप से आत्मा की रक्षा करती है।

मंत्र की चौथी बात है-**'यज्ञे प्रतिष्ठिताः'** -सबका जीवन याज्ञिक भावना में सब प्रकार से निहित हो। यह जड़ और चेतन संसार एक-दूसरे के सहयोग और संगतिकरण से चल रहा है। यदि इस शृंखला की एक कड़ी भी टूट जाय तो सब काम ठप्प हो जाएँगे।

चारों वेदों में एक प्रश्न है-**'पृच्छामि यत्र भुवनस्य नाभिः'**-'समस्त संसार का केन्द्रबिन्दु (धुरी) क्या है जिस पर यह चल रहाह है, जिस पर इसका अस्तित्व है?' इस प्रश्न का चारों वेदों में एक ही उत्तर है-**'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'**-'यह यज्ञ की भावना ही धुरी है, जिस पर यह संसार घूम रहा है।' यज्ञ की भावना, त्यागपूर्वक भोग की भावना, खिलाकर खाने की भावना, परिवार में से लुप्त हुई तो परिवार बिखरा और राष्ट्र में से लुप्त हुई तो राष्ट्र नष्ट हुआ। यदि सारे संसार का अस्तित्व है तो यज्ञ भावना पर।

मंत्र के अन्तिम शब्द हैं-**'लोको निघनम्'**-ये आचरण मनुष्यमात्र को मृत्यु पर्यन्त करते रहने चाहिएँ।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितम्

-आचार्य दीपंकर, मेरठ

छन्द-११०

स्वमुक्तिं कृत्वाद्यां कठिनमपकारं हृदयतो
वहिस्कृत्यास्माभिस्तदनु निजमुक्त्यै व्यवसितम्।
समं गत्वा किंचित् सपदि रणभूमिं त्यजति स
पतन् शत्रोः पादे भृश्यामिव तथा पातयति नः।।

अपनी स्वतंत्रता हमने
प्रथम स्थान पर रखी तथा
मुस्लिम शासन-काल ने
जो असहनीय अपकार हमारे साथ
किये थे, उन्हें
अपने मनों से निकाल दिया !!
इसके बाद अपनी स्वतंत्रता के लिए
हमने अभियान चलाये !!!
कुछ दूर तक तो वह हमारे साथ
चला !
परन्तु अचानक रणभूमि छोड़कर
भाग खड़ा हुआ !!
वह फिरंगी के कदमों पर
चौपट होकर जा पड़ा और
हमें भी गिरा दिया !!!

('दयानन्द चरितम्' से साभार, क्रमशः)

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

परोपकारिणी सभा, अजमेर के मुखपत्र 'परोपकारी' पाक्षिक (जून द्वितीय) ने वैदिक विद्वान् पं.गणपति शर्मा और स्वामी दर्शनानन्द के मध्य हुए शास्त्रार्थ का विवरण प्रकाशित किया है। इसमें पं.गणपति शर्मा के लिए 'प्रतिवादी भयंकर' विशेषण का प्रयोग किया गया है। यह कहाँ तक उचित है?

-वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', 150, नई बस्ती, सीतापुर

समाधान :

पं.गणपति शर्मा जैसे मान्य वैदिक विद्वान् के लिए 'प्रतिवादी भयंकर' जैसा हल्का विशेषण सर्वथा अनुपयुक्त और अनुचित है। प्रतिवाद भयंकर नामधारी पौराणिक पक्ष में एक व्यक्ति हो चुके हैं, जो अपनी अश्लील और असभ्य दलीलों के लिए कुख्यात थे। पं.गणपति शर्मा जैसे उच्चकोटि के शास्त्रज्ञ, गंभीर वक्ता के लिए 'प्रतिवादी भयंकर' विशेषण- अज्ञानता का परिचायक है। **-सम्पादक**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

गद्य जहाँ असमर्थ है...

**(३)कहाँ दीप है जो किसी उर्वशी की
किरन उँगलियों को छुए बिन जला हो।**

अथवा

**(४)परस तुम्हारा प्राण बन गया,
दरस तुम्हारा श्वास बन गया।**

तीसरे उद्धरण में उर्वशी सौन्दर्य का प्रतीक है। दीपक के रूपक से चेतना के जन्म की ओर संकेत है। चौथे उद्धरण में सौन्दर्य और प्रेम से किस प्रकार प्राण (ताप-चेतना) और श्वास (गीत) का जन्म हुआ- इसकी कहानी है। सौन्दर्य और प्रेम द्वारा सृष्टि के उद्भव और विकास का रूपक यह गीत है।

प्रेम-

किन्तु केवल स्थिति या चित्ति ही जीवन नहीं है, वहाँ गति भी है और जीवन को गति देने वाली शक्ति का ही नाम है प्रेम। तात्विक दृष्टि से प्रेम का अर्थ है-एक से दो होना, दो से अनेक होना और अनेक से फिर एक हो जाना। सृष्टि के विकास का भी यही रहस्य है- 'एकोहम् बहुस्याम'। जहाँ अद्वैत है, वहाँ प्रेम नहीं हो सकता। प्रेम के लिए द्वैत की आवश्यकता है। द्वैत अनेकत्व को जन्म देता है, किन्तु प्रेम इस द्वैत (व्यक्ति) और अनेकत्व (समष्टि) से होता हुआ अद्वैत की ओर ही जाता है। सम्पूर्ण सृष्टि एक तत्व से बनी है और उसी में समा जायेगी।

व्यावहारिक दृष्टि से प्रेम का अर्थ है किसी को प्राप्त करने की, और प्राप्त करके स्वयं वही बन जाने की इच्छा लालसा या आकांक्षा। प्राप्त करने का अर्थ है किसी स्वप्न को, किसी प्यास को या किसी आदर्श को साकार करने की कामना। और कामना ही गति है।

**जब तक जीवित आस एक भी
तभी तलक साँसों में भी गति**

(बादर बरस गयो)

अथवा

**हँस कहा उसने चलाती चाह है
आदमी चलता नहीं संसार में**

जब हम अपनी दृष्टि भीतर से बाहर की ओर करते हैं, तब हम प्रेम (कामना-इच्छा) करते हैं और तभी हम किसी आदर्श को जन्म देते हैं। जो वस्तु भीतर है उकसे लिए हमें भाग दौड़ नहीं करनी पड़ती, किन्तु जो वस्तु बाहर है उसके लिए प्रयत्न की अनिवार्य है। यद्यपि प्रेम भी एक भावना का ही नाम है जो भीतर है, किन्तु उसका आकार बाहर होता है। वह किसी व्यक्ति वस्तु या आदर्श को रूप धारण कर ही साकार हो सकता है। वह निराकार साकार है। यदि तनिक सूक्ष्म दृष्टि से देखिये तो पता चलेगा कि प्रेम के लिए हम स्वयं (एक) का ही भावना के माध्यम से एक और रूप रचते है। जो हमारा इष्ट है वस्तुतः वह 'पर' नहीं बल्कि हमारा 'स्व' ही भीतर से बाहर आकर 'पर' बन गया है यानी हम स्वयं भीतर से बाहर आकर स्वयं से प्रेम करते हैं। 'निराकार! जब तुम्हें दिया आकार, स्वयं साकार हो गया।' इसीलिए मैं कहता हूँ कि प्रेम भावना का सूक्ष्म बाह्य प्रयत्न है-व्यष्टि और समष्टि से होकर इष्ट तक आने का मार्ग। तो प्रेम एक प्रयत्न है और प्रयत्न ही गति है। जीवन में गति है तो वह प्रेम है।

यहाँ एक प्रश्न पूछा जा सकता है- क्या प्रेम जीवन के लिए अनिवार्य है? मेरा उत्तर है 'हाँ'। किन्तु क्यों? इसलिए कि वह हृदय की अनिवार्य भूख है। पर इस भूख को समझने के लिए हमें सृष्टि के जन्म तक दृष्टि फैलानी होगी। सारे धर्मग्रन्थों ने स्वीकार किया है कि इस विश्व का उद्भव एक तत्व से हुआ है। लेकिन यह किस प्रकार संभव है। प्रकृति और पुरुष के संयोग का नाम सृष्टि है। दो के बिना जन्म कहाँ? तो मानना ही पड़ता है कि वह आदि तत्व जिससे इस विश्व की रचना हुई है, अवश्य ही एक होकर दो था। हमारे यहाँ उसे अर्धनारीश्वर कहा गया है, आधा अंग स्त्री का और आधा अंग पुरुष का- एक साथ स्त्री-पुरुष-हाँ। (अभी पपीते की भी कुछ ऐसी नस्लें मिली हैं जो एक साथ नर-मादा होती हैं) उस अर्धनारीश्वर (एक तत्व) ने प्रेम के लिए या कहिये सृष्टि प्रसारण के लिए, केलि के लिए, क्रीड़ा के लिए अपने को दो में विभाजित किया अद्वैत ने द्वैत को जन्म दिया। दो के बाद चार, चार के बाद आठ और फिर इस तरह सृष्टि बन गई। किन्तु आदि तत्व के (division) से संसार में एक बहुत बड़ी ट्रेजडी हो गई कि प्रत्येक चेतन तत्व एक अपूर्ण आत्मा- विभाजित आत्मा हो गया। फलस्वरूप उसके हृदय में प्यास है, भूख है, अपने उस आत्मा के साथी (Soul-mate) के लिए जो सृष्टि के आदिकाल से उससे अलग है और जिसको खोजने के लिए, जिसको प्राप्त करने के लिए बार-बार उसे मिट्टी के ये कपड़े बदलने पड़ते हैं-

**नाश के इस नगर में तुम्हीं एक थे
खोजता मैं जिसे आ गया था यहाँ,
तुम न होते अगर तो मुझे क्या पता
तन भटकता कहाँ, मन भटकता कहाँ,
वह तुम्हीं हो कि जिसके लिए आज तक
मैं सिसकता रहा शब्द में, गान में,
वह तुम्हीं हो कि जिसके बिना शव बना
मैं भटकता रहा रोज शमशान में।**

बस, आत्मा के साथी के लिए जो प्रत्येक चेतन तत्व में प्यास और चाह है, उसी का नाम प्रेम है और यह प्यास तब तक तृप्त नहीं बनेगी, जब तक उस मन के मीत से आत्म-सम्बन्ध स्थापित नहीं हो जाता। यह आवागमन का चक्र भी तब तक चलता रहेगा, जब तक वह नहीं मिलेगा। जिस दिन वह मिल जायेगा, उसी दिन मुक्ति हो जाएगी। मैं ही क्या, मैं जिधर दृष्टि डालता हूँ, देखता हूँ-

**दीप को अपना बनाने को पतंग जल रहा है,
बूँद बनने को समुन्दर की हिमालय गल रहा है,
प्यार पाने को धरा का मेघ है व्याकुल गगन में
चूमने को मृत्यु निशि दिन श्वास पंथी चल रहा है।**

(बादर बरस गयो)

तो हम बार-बार अपने बिछड़े हुए साथी की खोज कर रहे हैं, पर बार-बार हम भटक जाते हैं- या तो हम अपना लक्ष्य पूजन-अर्चन (मन्दिर-मस्जिद) को बना लेते हैं, या प्रकृति को या योग समाधि को। हम मनुष्य हैं, हमारी आत्मा का साथी तो कहीं मनुष्यों में ही मिलेगा। किन्तु हम वहाँ न खोजकर इधर उधर भटकते फिरते हैं। फिर मुक्ति कैसे हो? मुझे भी भरमाया गया-

**खोजने जब चला मैं तुम्हें विश्व में
मन्दिरों में बहुत कुछ भुलावा दिया,
खैर पर यह हुई उम्र की दौड़ में
ख्याल मैंने न कुछ पत्थरों का किया,
पर्वतों ने झुका शीश चूमें चरण
बाँह डाली कली ने गले में मचल,
एक तस्वीर तेरी लिये किन्तु मैं
साफ दामन बचाकर गया ही निकल।**

पर इस बार मेरे पास उसकी तस्वीर थी, इसीलिए मैं भूला नहीं। पर अभी गन्तव्य मिला नहीं है- अगर यूँ कहूँ कि मिलकर छूट गया है तो अधिक सही होगा। जीवन का यह बहुत बड़ा अभिशाप और साथ-साथ वरदान भी है कि जो हमारी मंजिल होती है, जब वह समीप आती है तब या तो हम उसको पीछे छोड़कर आगे बढ़ जाते हैं या वह स्वयं और आगे बढ़ जाती है-

**पागल हो तलाश में जिसकी
हम खुद बन जाते रज मग की
किन्तु प्राप्ति की व्याकुलता में
कभी कभी हम मंजिल से भी आगे बढ़ जाते।**

अथवा

**मैं समझता था कि मंजिल पर पहुँच
आना-जाना खत्म यह हो जायेगा।
पर हजारों बार ही ऐसा हुआ
पास आकर दूर जाना पड़ गया।**

इसी प्रकार जब हम भावना (प्रेम) के माध्यम से अपने उस आत्मा के साथी के निकट पहुँचते हैं, तो वह पीछे खिसकता है और खिसकते खिसकते विश्वात्मा में मिल जाता है। अन्त में हम भी उसकी खोज करते करते विश्वात्मा तक पहुँच जाते हैं-

**मैं तो तेरे पूजन को आया था तेरे द्वार
तू ही मिला न मुझे वहाँ मिल गया खड़ा संसार।**

और फिर मनुष्य स्वयं ही कहने लगता है-

**दूर कितने भी रहो तुम पास प्रतिपल,
क्योंकि मेरी साधना ने पल निमिष चल,
कर दिए केन्द्रित सदा को ताप बल से
विश्व में तुम और तुममें विश्व भर का प्यार!
हर जगह ही अब तुम्हारा द्वार।**

और जिस दिन मनुष्य अपनी आत्मा का प्रेम (भावना) के द्वारा विश्वात्मा से तादात्म्य स्थापित कर लेता है उसी दिन उसकी मुक्ति हो जाती है। विश्वात्मा से अपनी आत्मा का तादात्म्य ही मुक्ति है और यह सदेह ही प्राप्त हो जाती है, आवागमन के चक्र को बहुत दूर छोड़कर।

एक बात इस सम्बन्ध में और कह दूँ तो अनुपयुक्त न होगा। जो व्यक्ति 'प्रेम' को नहीं जानता वह केवल 'मैं' (अहं) को ही जानता है। और केवल 'मैं' को जानने का अर्थ है शेष सृष्टि के रागात्मक सम्बन्ध से हीन हो जाना। किन्तु जो व्यक्ति प्रेम करता है वह 'मैं' (अहं) को समूल नष्ट तो नहीं करता, उसका 'तुम' से सम्बन्ध स्थापित कर उसका पर्युत्थान करता है। वह 'मैं' कहता तो है, पर 'मैं' कहने से पूर्व वह कहता है 'तुम'। यथा-

**गंध तुम्हारी थी मैं तो बस
बनकर सुमन चुरा लाया था,
रूप तुम्हारा था मैंने तो केवल
दर्पण दिखलाया था।**

और इस प्रकार वह व्यष्टि की संकुचित सीमा से निकलकर समष्टि की ओर जाता है- अपने व्यक्तित्व का उत्थान कर देवत्व की ओर जाता है। इसीलिए मैं प्रेम को जीवन की गति के साथ-साथ एक बहुत बड़ी शक्ति- एटम बम से भी अधिक प्रबल मानता हूँ और जो उसका विरोध करता है, उससे कहता हूँ-

प्रेम बिन मनुष्य दुष्चरित्र है

अथवा

प्रेम जो न तो मनुज अशु) है।

मृत्यु-

प्रेम जीवन की गति है। अपनी आत्मा के साथी के लिए जो खोज हम विभिन्न रूपों में कर रहे हैं, उसका नाम जीवन है। पर जो खोज करता है वह थकता भी है। संसार की प्रत्येक वस्तु शक्ति और गति को जीवित रखने के लिए विश्राम लेती है। यह चेतना जो हजारों बरसों से अपने साथी के लिए भटकती फिर रही है, इसको भी थकान आती है। थकान आने पर यह भी विश्राम चाहती है। इसको अपनी सेज पर जो क्षण भर विश्राम देती है- उसी का नाम है मृत्यु- जिसे मैं यति कहता हूँ।

**जीवन क्या माटी के तन में
केवल गति भर देना,
और मृत्यु क्या उस गति को ही
क्षण भर यति कर देना।**

(बादर बरस गयो)

अथवा

**है आवश्यक तो विराम भी
यदि पथ लम्बा और कठिन हो,
पर केवल उतना ही जितने
से पथ-श्रम की दूर थकन हो।**

इन तीन सत्यों के अतिरिक्त एक चौथा सत्य भी है- जिसका नाम है रोटी (पेट की भूख)। हृदय की भूख प्यास जिस प्रकार जीवन-स्थिति के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार पेट की भूख भी शरीर-स्थिति के लिए अनिवार्य है। और जिस प्रकार हृदय (प्रेम) के माध्यम से मनुष्य अन्त मे विश्व की एकता तक पहुँचता है, उसी प्रकार रोटी के माध्यम से भी हम अन्त में मानव एकता तक ही पहुँचते हैं। दोनों का लक्ष्य एक है, इसलिए दोनों को मैंने एक प्रेम के अन्तर्गत ही ले लिया है।

जीवन के प्रति जो मेरी दृष्टि है, वह मैंने यहाँ आपके सामने स्पष्ट की है। यह गलत है या सही, प्रतिगामी या प्रगतिवादी, यह तो निर्णय आप करेंगे। मैं तो केवल क्षम्य गर्व के साथ इतना ही कहता हूँ कि इस दृष्टिकोण से मुझे अपने जीवन में काफी बल मिला है।

'इन्द्रेनी' **-नीरज**
४७, मेरिस रोड, अलीगढ़

('प्राण-गीत' काव्य के 'दृष्टिकोण' शीर्षक भूमिका से साभार)

शुभाकांक्षा

मई का अंक कुछ कारणवश देर से मिला। अतः मई जून दोनों अंकों पर अपना मत व्यक्त कर रहा हूँ। प्रखर राष्ट्रवादी व अनुपम वक्ता प्रकाशवीर शास्त्री को मुखपृष्ठ पर देखकर अनेक स्मृतियाँ हृदय-पटल पर ताजा हो गईं। मैं लीक से हटकर चलने में विश्वास रखता हूँ। दो अक्टूबर को गांधी जयन्ती मनाई जाती है। लालबहादुर शास्त्री का जन्मदिन भी दो अक्टूबर ही है। उनका नाम यदा कदा अखबार के किसी कोने में देखने को मिला करता था। अतः निर्णय लिया कि इस बार नगर में शास्त्री जयन्ती मनायेंगे। अब शास्त्री के व्यक्तित्व के योग्य वक्ता पर चर्चा हुई, तो सभी साथियों ने निर्णय किया कि प्रकाशवीर शास्त्री को बुलाया जाय। बात १९७२ की थी। देश में राष्ट्रभावना का उभार था। शास्त्रीजी संसद में हमारे क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते थे। नगर के बीचो-बीच एक धर्मशाला के प्रांगण में सभा का आयोजन किया। श्रोताओं की भीड़ उमड़ पड़ी, शास्त्री जी का भाषण टेप जैसा होता था, सड़क तक भीड़ चुप होकर सुन रही थी। सभा की समाप्ति पर मैंने क्षमाप्रार्थी जैसी मुद्रा में कहा-शास्त्रीजी, जगह आपके लायक छोटी रही। शास्त्री जी का उत्तर था-प्रोफेसर साहब! वक्ता को बोलने में तभी आनन्द आता है, जब स्थान खचाखच भरा हो। शास्त्री जैसे वक्ता बिरले ही होते हैं।

सम्पादक वीररस के कवि हैं, अतः उनके सम्पादकीय में गहरा चिन्तन व राष्ट्रभावना देखने को मिलती है। पं. रामचन्द्र देहलवी के लेखों पर कमेंट सूर्य को दीपक दिखाना है। 'काव्यायन' में उत्कृष्ट रचनाओं को ही सम्मान मिलता है। अतः सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। उन्नाव में सम्मानित होने वले गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' को मेरी हार्दिक बधाई। आदरणीय पाल प्रवीण जी ने ८२वें वर्ष में प्रवेश किया है, उनको मेरी भूरि-भूरि शुभकामनाएँ। वे हमारे बड़े भाई हैं। मैं १६ जुलाई को ८९वें वर्ष में प्रवेश करूँगा। जून अंक में वीर सावरकर जीके विचार पढ़कर स्वराज्य आन्दोलन की झाँकी देखने को मिली। स्थायी स्तम्भों में अच्छी सामग्री रहती है। मुझ जैसे ग्रामीण अंचल के सामान्य से अध्यापक को सम्पादक महोदय ने 'व्यक्ति-विशेष' का विषय बनाया, इसके लिए मै। उनका आभारी रहूँगा। एक सूक्ति है-'परगुण परमाणु पर्वती कृत्यं नित्यं निज हृदि विकसन्ति, सन्ति संत कियन्तः'-डॉ.आर्य ऐसे ही सन्त हैं।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा

सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

देश और विदेश में २१ जून को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। बड़ी खुशी की बात है कि आज के लोग योगगुरु बाबा रामदेव के बताये हुए योगासनों का लाभ प्राप्त कर रहे हैं लेकिन हम योगशास्त्र के जनक महर्षि पतंजलि के योगदान को भला कैसे भुला सकते हैं जिन्होंने योगमार्ग का प्रवर्तन किया। आज हम महर्षि पतंजलि का आभार प्रकट करते हैं। योग मार्ग के साधकों से हमारा विनम्र अनुरोध है कि वे पतंजलि के योगशास्त्र की प्रमुख बातें महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत 'सत्यार्थ प्रकाश' में अंकित हैं क्योंकि स्वयं महर्षि दयानन्द एक सम्पूर्ण योग के पूर्ण ज्ञाता थे। आर्य समाज में आज भी योगाभ्यास कराया जाता है।

-अजय कुमार पटेल

संस्थापक-इण्डियन कान्वेन्ट पब्लिक स्कूल, बेहटा, कुर्सीरोड, लखनऊ

***

यह सन्तोष की बात है कि अब 'आर्य लोक वार्ता' प्रतिमास डाक विभाग की सक्रियता से मिल जाता है।(पूर्व वर्षों में पत्र का वितरण मेरे पास तक नहीं हो रहा था) जून-१८ अंक देखा, चित्त प्रसन्न हो गया। पत्र का एक एक शब्द जब तक पढ़ नहीं लिया, तब तक मन को शान्ति नहीं मिली। पढ़ने के बाद मैं इतना भावाभिवूत हो गया, कि वर्णन करना कठिन है। कितना धन्यवाद दूँ, सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य को तथा उनके सहयोगी सम्पादक मण्डल को, निश्चय नहीं कर पा रहा हूँ।

मेरी प्रसन्नता का सर्वप्रमुख कारण डॉ.वेद प्रकाश आर्य का सम्पादकीय लेख 'आर्यों का नया तीर्थ' है। यह अत्यंत मौलिक तथा सामयिक लेख है। सम्पादक का विचार कितना सार्थक है कि जब महर्षि ने अपने ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना जिस नवलखा महल, उदयपुर में बैठकर की थी, वहाँ भव्य स्मारक 'सत्यार्थ प्रकाश न्यास' द्वारा बन चुका है और आगे अभी बन रहा है तो उनके अद्वितीय ग्रंथ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' की रचना जिस सरयूबाग अयोध्या में बैठकर महर्षि ने की थी, वह स्थान उपेक्षित पड़ा रहे, यह कितनी दुःखद और लज्जाजनक स्थिति होगी। अस्तु, उक्त स्थल पर भव्य स्मारक हेतु कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य, पं. दीनानाथ शास्त्री, डॉ.एम.एस.कोठारी एवं महान् संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती के प्रयासों के साथ मेरी समस्त शुभ कामनाएँ संलग्न हैं। 'आर्य लोक वार्ता' द्वारा निश्चय ही इस दिशा में नेतृत्व एवं पथ प्रदर्शक की भूमिका का निर्वाह किया जा रहा है। मैं स्वयं स्मारक निर्माण हेतु यथाशक्ति प्रयत्न करने हेतु संकल्पबद्ध हूँ। जब पं.दीनानाथ शास्त्री जी ने इस संबन्ध में अग्रलेख पढ़ा तो हर्ष विभोर हो गये। उन्होंने मुझसे कहा- जैसे डॉ. वेद प्रकाश जी मुझे मिलेंगे, मैं उन्हें ५००रुपये 'आर्य लोक वार्ता' हेतु सहयोग दूँगा। जब तक स्मारक बन नहीं जाता, तब तक इसी प्रकार क्रियाशील बने रहें।

-सत्य प्रकाश आर्य

आवास विकास कालोनी, बाराबंकी

***

संदर्भ- 'आर्य लोक वार्ता' अंक-१२, वर्ष-२०- मुखपृष्ठ पर 'विनय पीयूष' स्थायी स्तंभ में 'कौन?' शीर्षक से यजुर्वेद २३/४५, ४६ मंत्र का काव्यानुवाद पढ़कर मुझे जिस आत्मिक आनन्द और उल्लास की अनुभूति हुई है, वह शब्दातीत है। यह काव्यानुवाद अद्भुत, अद्वितीय और अनुपम है। गीत की शब्दावली, भावप्रवण ललित कोमल, विषयानुकूल और यथार्थ भाव बोधिनी है। ऐसा सरल सुन्दर काव्यानुवाद मैंने आज तक कहीं नहीं पढ़ा है। सृष्टि के सर्वाधिक सुरम्य रूप के चित्रण द्वारा रचयिता के प्रति प्रेमश्रद्धा के स्फुरण का इससे सुंदर उपक्रम और हो ही क्या सकता है? क्या नहीं है इस

काव्यानुवाद में। प्रश्नोत्तर, प्रहेलिका, अनुप्रास, वक्रोक्ति, बिम्बविधान- अनेक काव्यालंकार एक छंद में अनुस्यूत हैं। भाव कलापक्ष में गजब का संतुलन कवि ने समायोजित किया है।

कोटि सूर्य समप्रभ। सूर्य एकाकी विचरता है- किंतु तेजपुंज बनकर। चन्द्र फिर फिर जन्मता है, प्रेम, आशा-विश्वास सौंदर्य लेकर। शीत की है अग्नि औषध दुःख की औषध परमात्मा है। बीजरोपण के लिए उर्वर धरा है-'माताभूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'। कवि अमृत खरे का कृतित्व सार्थक है, धन्य है वेदमंत्र के संस्पर्श से।

-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

19/838, इन्दिरा नगर, रिंग रोड, लखनऊ

***

अप्रैल, मई '१८ अंक एक तारतम्य में पढ़ गया।- 'धधकते पृष्ठ की पृष्ठभूमि' लेख पढ़कर विचारों में खो गया, कितना महान् आपका कार्य है, अभियान है। मेरा अब बाहर जाना आना हो नहीं पाता, आपसे भेंट हुए भी काफी समय हो गया तथापि 'आर्य लोक वार्ता' का पाठ कर लेता हूँ। परमात्मा से प्रार्थना है कि आपकी लेखनी में अनवरत शक्ति बनी रहे। मैं आ.लो.वा. हेतु ५००रु. की धनराशि अभी आ.लो. वा. के खाते में ट्रांसफर कर रहा हूँ। आशा है मेरी इस भेंट को स्वीकार करेंगे। शुभेच्छु,

-पाण्डेय रमेन्द्र

इन्दिरा नगर, रायबरेली

***

आर्य लोक वार्ता अंक जून २०१८ में सम्पादकीय पढ़कर पता लगा कि तीर्थ किसे कहते हैं अस्तु लेखक के अनुसार- आर्य समाज का अस्तित्व खत्म हो जाना चाहिए था किन्तु ऐसा नहीं हुआ और आर्य समाज ने अपनी मौलिक शक्तियों के बलबूते स्वार्थ साधक व्यक्तियों को सन्देश दिया कि हम तुम्हारे बिना भी चल सकते हैं क्योंकि दयानन्द की तपश्चर्या, ब्रह्मचर्य, विद्याबल हमारे साथ है। निश्चय ही सरयूबाग अयोध्या में महर्षि वेदभाष्य का स्मारक अक्षय कीर्ति का वरण करेगा। कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य सब,प्रकार से समर्थ हैं, उनका नेतृत्व सफल है। मेरी शुभकामनाएँ उनके साथ हैं। उपरोक्त पंक्तियां सम्पादक के सूक्ष्म निरीक्षण, तत्कालीन एवं वर्तमान परिस्थितियों को देख कर किये गये तुलनात्मक एवं आशावादी अध्ययन एवं सोच का परिणाम है जो कि सम्पादक की लेखनी से प्रस्फुटित है। यही वास्तविकता है, सत्य है एवं ऋषिवर दयानन्द का अमर प्रसाद है।

-प्रेमचन्द्र शर्मा

बहादुर पुर, कुर्सी रोड, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जून १८ अंक कुछ विलम्ब से देखने को मिला। आर्य समाज मंदिर चन्द्र नगर जाकर इस अंक की प्रति मुझे मिल सकी क्योंकि मुझे इधर कई मास से आर्य लोक वार्ता की प्राप्ति नहीं हो पा रही है। पढ़कर मन पुलकित हो उठा। आपने मेरे हृदय के काव्यात्मक

उद्गारों को उचित स्थान देकर 'काव्यायन' के अन्तर्गत प्रकाशित किया है। कई लोगों ने मुझसे 'धधकते पृष्ठ' काव्य पुस्तक की माँग की है। यदि आप अगले मास अगस्त में तृतीय रविवार का आर्य समाज चन्द्रनगर में आयें तो 'धधकते पृष्ठ' काव्य की प्रति मुझे उपलब्ध करा दें, जिससे उक्त काव्य को मैं मित्र को दे दूँ और उसे प्रचारित करूँ क्योंकि ऐसे राष्ट्र प्रेम से ओतप्रोत काव्य का देश के कोने कोने में प्रचार प्रसार होना ही चाहिए। यह जानकर भी मुझे हर्ष का अनुभव हुआ कि सरयूबाग अयोध्या में वेदभाष्य स्मारक के रूप में एक नये तीर्थ का निर्माण हो रहा है। शुभकामनाएँ।

-जय प्रकाश शुक्ल

आशियाना कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता के अग्रलेख अत्यंत विचारोत्तेजक, चिन्तनपूर्ण तथा खोजपूर्ण होते हैं। उनका सारतत्व हृदय को उद्वेलित करता है तथा मन-प्राण को स्वस्थ पोषण प्रदान करता है। प्रभाव तो सार्वकालिक होता ही है। इसी श्रृंखला में जून अंक में महान राष्ट्रभक्त वीर सावरकर की जयन्ती पर उनकी पुस्तक '१८५७ का स्वातंत्र्य समर' के प्रथम अध्याय की प्रस्तुति स्वधर्म और स्वराज्य के प्रति प्रीति पल्लवन की प्रेरणा प्रदान करती है। आलेख पुनरपि पठनीय और मननीय है। आपके सम्पादन-धर्म को साधुवाद। सम्पादकीय में महर्षि दयानन्द जी की तीर्थ-संचेतना से पत्रिका गौरवान्वित करती है। कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य का पांचवां 'शक्ति तीर्थ' ऐतिहासिक उपलब्धि बनेगी। 'व्यक्ति-विशेष' में डॉ. चन्द्रपाल शर्मा पर गरिमापूर्ण उल्लेख अच्छा लगा। संयोग से उनसे यदा कदा मेरी दूरभाषीय वार्ता हो जाती है, मैं उनके लेखकीय कृतित्व से प्रभावित हूँ। अन्य धारावाहिक सरणियों में प्रदत्त ज्ञान जीवनोपयोगी है जिसकी महत्ता वर्णनातीत है। भाई अमृत खरे का 'विनय पीयूष' काव्यानुवाद मन प्रफुल्लित कर देता है, उनकी यशस्वी लेखनी को नमन। 'काव्यायन' मं जय प्रकाश शुक्ल, डॉ. कैलाश निगम, रामा आर्य, सरस आदि की कविताएं अत्यंत प्रभावी रहीं। कालजयी काव्य में रामधारी सिंह दिनकर तथा पं.राघवेन्द्र शर्मा 'ब्रजेश' की रचनाएं श्रेष्ठ हैं एवं स्वदेश प्रेम का सन्देश देती हैं। स्वधर्म, स्वराज्य और स्वदेश की रक्षा और समुन्नति स्वस्थ वैचारिक क्रान्ति से ही सम्भव है, अस्तु विनम्र कामना है-

मानस तीर्थ सत्य सर्वोत्तम, करें सुभावों से अवगाहन।
वेदविहित मंत्रों से कर लें, चेतन देवों का आवाहन।
बल वैभव सुख शांति प्रदाता, ओमध्वजा पथदर्शक है।
विश्वविजय के लिए चलें हम, लेकर सत्कर्मों के वाहन।।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

***

आपकी 'आर्य लोक वार्ता' एक जागृति है जिसमें लुप्तप्राय लेख भाषण प्रकाशित करने में कितनी मेहनत करनी पड़ती है। इस बार आपने प्रकाशवीर शास्त्री की रचना 'जो कार्य मुगल सात सौ साल

में नहीं कर सके, जिन्ना ने कुछ महीनों में कर दिखाया' प्रकाशित की है। आर्य समाज के जलसे में शास्त्री जी को सुनने हेतु पूरा आजमगढ़ उमड़ पड़ता था। वह बहुत निर्भीक वक्ता थे, नेता थे। और विद्वानों के विचारों के साथ आपका सम्पादकीय सराहनीय, पठनीय और ज्ञानवर्द्धक होता है। शहीद के रक्त से स्याही की तुलना निन्दनीय एवं मेरी दृष्टि से अपराध है। सैनिक या उसका रक्त अतुलनीय है। सैनिक का एक विशेष दर्जा है, उसके मरने पर 'शहीद' कहा जाता है, उसके शव को तिरंगे में लपेट कर सैनिक सलामी दी जाती है, सेना अपने रायफल के साथ नतमस्तक होकर भावभीनी विदाई देती है। उस मंत्री को पता नहीं एक सैनिक कितनी कठिन तपस्या, लगन और परिश्रम से तैयार होता है, जो रेगिस्तान, जंगल व धंसते हुए बर्फ व पानी में देश की रक्षा को तत्पर रहता है साथ ही आंधी तूफान व बाढ़ से नागरिकों को उबारता है। सैनिक मर्यादा में काम करते हैं देश की रक्षा में वे राम, कृष्ण बनकर हमारी मदद करते हैं।

कुछ लोग गुण्डई, बदमाशी व वसूली करके नेता बन जाते हैं और कुछ भी बयान देते रहते हैं क्योंकि उनकी कोई मर्यादा नहीं। अभी कुछ लोग पाकिस्तान के समर्थन में कश्मीर की आजादी की बात करते हैं। ऐसे लोगों को राजनीतिक पार्टी से बाहर कर पाकिस्तान भेजा जाय या आजीवन कारावास का मुकदमा चलाया जाय।

-शिशिर कुमार श्रीवास्तव

सी-335/2, इन्दिरा नगर, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जून अंक में महान क्रान्तिकारी वीर सावरकर के स्वदेश, स्वधर्म और स्वराज्य के प्रति तथ्यपूर्ण विचार पढ़कर उत्तेजना और पीड़ा सी जाग्रत हो गयी। सचमुच हमारे देश के तत्कालीन कर्णधारों ने देश की स्वतंत्रता के लिए कितने कष्ट सहे परन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति का परिणाम सुखद नहीं रहा। देश आज भी उनकी भूलों का दंश झेल रहा है जो कभी शायद ही समाप्त हो। वीर सावरकर को उनकी जन्म जयन्ती पर हार्दिक श्रद्धांजलि। आर्य तीर्थों की जानकारी बहुत अच्छी लगी तथा पांचवें तीर्थ की स्थापना की घोषणा मन को हर्षित करती है। कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य का दृढ़ संकल्प शीघ्र पूर्ण हो, ऐसी सद्कामना है। शुभाकांक्षा और काव्यायन स्तम्भ अत्यंत विचारणीय चिन्तन प्रदान करते हैं, मुझे यह दोनों पृष्ठ विशेष प्रिय लगते हैं। अन्य प्रकाशित सामग्री भी हृदय को आनन्दित करती है। आपका विषय चयन गागर में सागर की उक्ति को चरितार्थ करता है। पत्र लघु आकार में है किन्तु बहुत उपयोगी है, इसका प्रत्येक अंक मैं संजोकर रखती हूँ और जब भी दुबारा पढ़ती हूँ तो नई ऊर्जा पाती हूँ। सभी रचनाकारों तथा आपके सम्पादन को साधुवाद।

-सविता वाणी

चौक, गौरीगंज, अमेठी (उ.प्र.)

***

धारावाहिक-(84)

मनुष्य का विराट् रूप

-आनन्दकुमार-

महाजनो येन गतः स पन्थाः

प्राचीन काल में शिष्यगण जब विद्योपार्जन करके गुरुकुल से विदा होने लगते थे तो उनके आचार्य अपने दीक्षान्त भाषण में अन्य अमूल्य उपदेशों के साथ एक उपदेश यह भी देते थे-

''अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्त्तेरन्। तथा तत्र वर्तेथाः। अथाव्याख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः सम्मर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम्।''

-तैत्तिरोयोपनिषद्।

अर्थात्-कर्त्तव्य-निश्चय अथवा सदाचार के सम्बन्ध में तुम्हें यदि कभी कोई शंका हो तो समाज में जो विद्वान्, परामर्श देने में कुशल, सत्कर्मशील, पवित्रात्मा, धर्माभिलाषी श्रेष्ठ पुरुष हों वे उन कर्मों में जैसा आचारण करते हों, तुम्हें भी वैसा ही करना चाहिये, तथा यदि किसी दोष से दूषित मनुष्यों के साथ व्यवहार करने में सन्देह जो तो समाज में जो विद्वान्, परामर्श देने में कुशल, सत्कर्मशील, पवित्रात्मा, धर्माभिलाषी श्रेष्ठ पुरुष हों, वे जैसा व्यवहार करते हों, तुम्हें भी वैसा ही करना चाहिये। यही शास्त्र की आज्ञा है, यही उपदेश है, यही वेदों का रहस्य है, यही परम्परागत शिक्षा है। तुमको इसी भांति अनुष्ठान करना चाहिये इसी प्रकार यह अनुष्ठान करना चाहिये।

यह गुरु-ज्ञान व्यावहारिक जगत में प्रवेश करने वाले नवयुवकों के ही काम का नहीं, सर्वसाधारण के लिये भी उपयोगी है। लोक में श्रेष्ठ पुरुषों का आचरण ही प्रमाण माना जाता है। उनके चरित्र की छोटी-छोटी बातों से भी साधारण व्यक्ति बहुत-कुछ सीख सकते हैं। आगे हम अधिकारी व्यक्तियों के जीवन की कुद शिक्षापूर्ण घटनायें दे रहे हैं।

१-प्रतिष्ठा का रहस्य

संस्कृत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार क्षेमेन्द्र ने अपने 'औचित्य-विचार-चर्चा' नामक ग्रन्थ में कवि-कुल-गुरु कालिदास का सुन्दर श्लोक दिया है। कहते हैं, कालिदास एक बार राजदूत होकर कुन्तल-नरेश की राजसभा में गये और वहाँ उपयुक्त आसन आदि के चक्कर में न पड़कर जमीन पर ही बैठ गये। कुन्तलराज जानता था कि वे प्रतिष्ठित पुरुष हैं, उच्चासन के अधिकारी हैं; अतएव उसने उनसे सम्मानपूर्व यथायोग्य स्थान पर बैठने को कहा। इस पर स्वात्माभिमानी महाकवि ने उत्तर दिया-यह पृथ्वीतल शेषनाग के फण-स्तंभ पर विराजमान् है, इस पर पर्वतों में श्रेष्ठ मेरु और सातों समुद्र स्थित हैं, यह स्थान मेरे लिये भी अनुपयुक्त नही है-अर्थात्, पृथ्वी पर बैठना मेरे लिये अप्रतिष्ठाजनक नहीं है।

प्रायः लोग यह समझते हैं कि ऊँचे पर पर या सबके आगे बैठने से प्रतिष्ठा होती है। सभा-सम्मेलनों में, संस्थाओं में कितने पद-लोलुप लोग उच्चासन की प्राप्ति से अपना गौरव बढ़ाने की कुचेष्टा करते हैं। वे उच्चासन पर भले ही बैठ जाएँ, सर्वसाधारण के हृदयासन पर नहीं बैठ सकते हैं। सच्ची प्रतिष्ठा लोगों के हृदयासन पर बैठने से ही मिलती है। उस पर सुयोग्य, सद्गुणी ही स्थान पाता है। और उस पर अधिकारपूर्वक बैठने वाला प्रत्येक परिस्थिति में प्रतिष्ठित ही बना रहता है। कालिदास के उपर्युक्त कथन का यही रहस्य है कि मनुष्य का आत्मगौरव-व्यक्तित्व- न तो ऊँचे पद के कारण बढ़ता है और न नीचे पद के कारण घटता है।

इस प्रसंग में विदुर का यह कथन स्मरण रखने योग्य है-

यमप्रयतमानं तु मानयन्ति स मानितः।
न मान्यमानो मन्येत न माव्यमभिसंज्वरेत्।।

-उद्योगपर्व

अर्थात्- जो स्वयं दूसरों से अपना सम्मान कराने का प्रयत्न नहीं करता, परन्तु लोग यदि उसे मानते हैं, तो वह सचमुच सम्मान्य है। प्रतिष्ठा पाकर मनुष्य को स्वयं अहंकार नहीं करना चाहिये और दूसरे को प्रतिष्ठित होते देखकर जलना नहीं चाहिये।

२-असाधु को साधुता से जीतो

हमारे शास्त्रों का आदेश है कि पापी के साथ स्वयं पापी न बन जाए; स्वयं तो सदा सज्जन ही बना रहे-

'न पापे प्रतिपापः स्यात् साधुरेव सदा भवेत्।' -महाभारत। कीचड़ को कीचड़ से नहीं, शुद्ध जल से धोने में लाभ और बुद्धिमानी है। भगवान् बुद्ध सबको नित्य यही उपदेश देते थे कि कोई यदि तुम्हारे साथ बुराई करता है तो तुम उसका उत्तर भलाई से दो, कोई गाली देता है तो उससे अधिकाधिक प्रेम करो, अपकारी के साथ उपकार करो- अपने चरित्र को निर्दोष एवं गौरवपूर्ण रखने का यही श्रेष्ठ उपाय है कि नीच के साथ स्वयं नीच न बनो।

एक दुष्ट मूर्ख ने इन बातों को यह उलटा अर्थ लगाया कि साधु लोग गाली देने वालों से विशेष प्रेम करते हैं, अतएव आदर-सत्कार की अपेक्षा खरी-खोटी बातों से उन्हें रिझाना सहज है। एक दिन वह जानबूझकर महात्मा बुद्ध को गन्दी गन्दी गालियां सुनाने लगा। बुद्ध शान्त भाव से सब कुछ सुनते और सहते रहे। अन्त में जब वह थक गया तो वे स्नेह पूर्वक बोले-वत्स, यह बताओ कि यदि कोई व्यक्ति किसी भेंट को स्वीकार न करे तो वह वस्तु किसकी मानी जायगी?

मूर्ख ने उत्तर दिया-जिसकी थी, उसीकी।

तब भगवान् बुद्ध ने पुनः कहा- तुम अपने अपशब्दों का कोष अपने ही पास रखो, मुझे उसकी आवश्यकता नहीं है। प्रतिध्वनि जिस प्रकार ध्वनि का अनुगमन करती है और छाया पदार्थ के साथ चलती है, उसी प्रकार दुःख अपराधी के साथ लगा रहता है। जिसका अन्तःकरण पवित्र है, उसे तुम दुर्वचनों से दूषित नहीं बना सकते। निर्मल आकाश पर थूकने से अपना ही मुख गन्दा होता है।

असाधु का वाणी-बाण निष्फल हो गया। महात्मा की साधुता और शिक्षा से प्रभावित होकर उसने उनके आगे अपना सिर झुका दिया। उसका दुष्कर्म भीतर ही भीतर उसीको पीड़ित करने लगा। विजयी महापुरुष से क्षमा-याचना के उपरान्त वह भक्तिपूर्वक उनके धर्म-संघ में सम्मिलित हो गया। ऊँट पहाड़ के नीचे आ गया।

पंडितप्रवर व्यास का यह कथन सिद्ध हुआ-

क्षमा वशीकृतिर्लोके क्षमया किं न साध्यते।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः।।

अर्थात्-संसार में क्षमा ही वशीकरण मंत्र है; क्षमा से सभी कार्य सिद्ध होते हैं; जिसके हाथ में शान्तिरूपी तलवार है, उसका दुर्जन क्या बिगाड़ लेगा?

(मनुष्य का विराट् रूप से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला (6)

ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई ?

-शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवी-

सूर्य का बराबार बाकायदा निकलना, चाँद का धीरे-धीरे घटना बढ़ना, सब किसी नियामक, शासक या मुन्तजिम को सिद्ध करते हैं, इसी के आधार पर अपने कार्यक्रम नियत करते हैं, तारीखें मुकर्रर करते हैं। नहीं तो कैसे वर्ष का अनुमान लगाया जाए ये कार्यक्रम किस आधार और विश्वास पर आधारित हैं? यह सब बातें प्रभु के अटल नियम के आधार पर कह रहे हैं। उसी के नियम से निश्चित समय पर साल पूरा जा जाता है। तो जो लोग नियम को मानते हैं नियामक को नहीं मानते, इन्तजाम को मानते हैं मुन्तजिम को नहीं मानते, प्रबन्ध को मानते हैं प्रबन्धक को नहीं मानते, वे आधे बेवकूफ हैं। यह अज्ञानता, नावाकफियत लोगों से धीरे-धीरे दूर होगी। तो इस मंत्र (य आत्मदा बलदा) में प्रभु के शासन के बारे में भी कहा गया है।

एक साहब ने मुझसे पूछा कि ''जब जीवात्मा उल्टे काम करता है, जैसे कहा जाता है वैसे नहीं करता तो भगवान् के लिए आवश्यक है कि वह उसे शिक्षा दे।'' तो उस शिक्षा देने का विषय बिल्कुल अलग है उसे तनासुख कहते हैं। तनासुख के शाब्दिक अर्थ जायल करना है, पुराना शरीर जायल करके नया शरीर देना है। मुसलमान तमासुख मानते हैं, तनासुख नहीं मानते। तमासुख अर्थात् मस्ख कर देना अंग्रेजी में उसके लिए Transform (ट्रांसफार्म) शब्द आता है। तो वे Transformation तो मानते हैं किन्तु Transmigration (ट्रांसमिगरेशन) नहीं मानते। मैंने उनसे एक बार यह पूछा कि 'क्या जिन लोगों ने खुदा का हुक्म नहीं माना था- कि हफ्ते के रोज मछली का शिकार न करना' कुछ लोगों के जबान के स्वाद के लालच में किसी न किसी प्रकार शिकार किया- तो खुदा नाराज हो गए थे और उसने उनको बन्दर व सूअर बना दिया। कुर्आन में लिखा हुआ है-

'मल्लअ्नहुल्लाहु व गजिबा अलैहि व जअल मिन्हुमुल् किरदत चल् खना जीर' *(सूरत-पांचवीं, रुकू-६, आयत-६०)*

अर्थ-जिन पर खुदा ने लानत की और उन पर अपना गजब नाजिल किया और बाज को बन्दर और सूअर बना दिया।

हनफी साहबान तो यही मानते हैं कि जैसी उनकी नी है, जाति है, Species (स्पीसीज) होती है उसी के मुआफिक खुदा ने उनको बना दिया। लेकिन अब जो अहमदी लोग हैं वे ऐसा नहीं मानते- तो उन्होंने जवाब दिया कि 'पंडित जी नहीं, उनकी सूरतें नहीं बदलीं, रहे तो वे आदमी ही किन्तु उनकी आदतें बन्दर और सूअर जैसी हो गईं।' मैंने कहा- 'यह तो और भी बुरा हुआ। आदमी रहते हुए उनकी आदतें बन्दर और सूअर जैसी हो गईं। जरा गौर कीजिए कि अगर सूअर की आदत वाला आदमी मेरे मकान की ओर आ रहा हो तो वह मेरे पास आएगा या कहीं और जाएगा। सूअर की आदत तो गन्दगी खाने की है। तो वह गन्दगी की तरफ जाएगा। यह तो अच्छा नहीं मालूम देगा कि शक्ल आदमी जैसी और आदत सूअर जैसी।' यह सुनकर वे शर्माने लगे। आगे मैंने कहा कि 'यदि आदमी की शक्ल होगी और आदत बन्दर की होगी तो बिना कारण दरख्त पर चढ़ जायेगा, कभी कोई चीज तोड़ेगा, कभी कोई चीज गिरा देगा। दूसरों का नुकसान करेगा।' तो आपका यह सुधार, सुधार नहीं होगा। बल्कि बिगाड़ होगा। पुरानी बात ही ठीक है कि खुदा ने उनको बन्दर और सूअर बना दिया। कुर्आन के इस लेख से तो हमारी बात सही हो जाती है कि जब इन्सान, इन्सान के योग्य नहीं रहता है तो परमात्मा उसे नीची योनि में भेज देता है।

हमारे एक मित्र हैं, वे एक भजनीक के बारे में कुछ बातें कर रहे थे। कहते थे कि वे बड़े मजाकिया आदमी हैं। जब मजाक उड़ाते हैं तो ईश्वर का भी मजाक उड़ा देते हैं। कहा करते हैं कि 'ईश्वर ने यह क्या किया कि किसी को अमीर बना दिया और किसी को गरीब बना दिया, किसी लंगड़ा बनाया और किसी को लूला, किसी को एक आंख दी और किसी की दोनों फोड़ दीं? और फिर ऐसी दुनिया बनाकर क्या मजे ले रहा है, कैसा खुश हो रहा है।' वैदिक सिद्धान्त से ईश्वर के ऊपर यह आक्षेप आ ही नहीं सकता। उसने जो कुछ भी किया है न्यायपूर्वक किया है, उसकी तुला सच्ची है, जिसने जैसा किया है उसी के अनुसार उसे फल मिल रहा है। 'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' जो कर्म किये हैं उसका फल अवश्यमेव भोगना पड़ेगा। जो लोग शरीर का दुःख भोग रहे हैं निश्चित रूप से उन्होंने अपने शरीर से दूसरों को कष्ट पहुंचाया है। शरीर से तीन पाप चोरी, व्यभिचार और हिंसा किये जा सकते हैं। उन पापों के करने के परिणामस्वरूप मनुष्य को शारीरिक कष्ट होते हैं। दिल्ली में एक मुसलमान फकीर थे जिनकी दोनों टांगे नहीं थीं। पैदाइशी नहीं थी उनके लिये चलना बड़ा मुश्किल था क्योंकि वे लम्बी डगें नहीं मार सकते थे क्योंकि उनकी टांगे बहुत छोटी थीं। जब उन्हें सड़क पार करनी होती थी तो वे किसी की मदद से सड़क पार किया करते थे। 'अल्लाह के नाम पर कुछ दिलवाइये।' मैंने कहा- उस अल्लाह के नाम पर जिसने बिना वजह आपकी टांगे ले लीं और दूसरों को दे दीं। देखिए कितने और लोग है उन सबकी टांगे हैं। वे सभी अच्छे ढंग से चलते फिरते हैं और आपको चलने फिरने में इतनी तकलीफ उठानी पड़ती है। अभी आप इतने मजबूर थे कि दूसरे आदमी की मदद से सड़क पार कर सके। ऐसे खुदा के नाम पर हम तो आपको कुछ नहीं देना चाहते। 'कहिये मजहब क्या कहता है?' मजहब तो कहता है कि खुदा कादिर है हो चाहे सो करे। मैंने कहा कुदरत का इतना बेजा इस्तेमाल कि आपकी बिना वजह टांगे ले लीं और दूसरों को दे दीं। मैंने आगे कहा "It is excellent to have a gaint's strength but it is tryanaous to use it like a gaint." किसी में दानव जैसा शारीरिक बल हो तो वह अच्छी बात है किन्तु उसको दानव की तरह प्रयोग में लाए यह जालिमाना बात है। खुदा अगर कादिर मुतलक है तो इसलिये कि आपकी या किसी की भी टांगे बिना मतलब छीन ले? अच्छा अब यह बताइये कि आपका दिल क्या कहता है? मियां जी ने जवाब दिया कि हां दिल तो कहता है कि कोई न कोई कारण जरूर है जो मुझे टांगे न मिलीं और दूसरों को मिल गईं। मैंने जरूर कोई गलती की होगी। तो मैंने कहा कि,

'देखिये धर्म तो कहता है कि खुदा कादिर मुतलक है जो चाहे सो करे और दिल जो खुदा का बनाया हुआ है वह यह कहता है कि नहीं, कोई न कोई वजह जरूर होनी चाहिए। यह साबित हुआ कि मजहब खुदा का बनाया हुआ नहीं है और दिल खुदा का बनाया हुआ है। क्योंकि आपने सच्ची बात कही है और आप समझ गए हैं तथा आपने मजहब की बात की गलती भी पहचान ली है इसलिए मैं आपको इकन्नी देता हूँ।'

मैं यही अर्ज करना चाहता हूँ कि हमें अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिए कि भगवान जो कुछ करता है वह हमारे कर्मों का ही फल होता है और मनुष्य जाति के भले के लिए होता है। कई बार ना समझी और अदूरदर्शिता के कारण बच्चे अपने मां-बाप के कार्यों से रूष्ट हो जाते हैं और उनकी आज्ञाओं के पालन में चूं चरा करते हैं।

एक बाबू गौरीशंकर जी थे। दिल्ली में रहते थे और लाटसाहब के दफ्तर में काम करते थे। वह अपने डिपार्टमेंट में सुपरिन्टेन्डेन्ट थे। बहुत अच्छे आदमी थे। वह शुद्धि सभा में भी काम करते थे। वे मेरे यहां घर पर आया करते थे और जब तब अपनी शंकाओं का समाधान भी किया करते थे। एक बार उन्होंने मुझसे कहा कि 'पंडित जी, एक सवाल है। बड़े दिनों से दिमाग में घूम रहा है उसका समाधान होना चाहिए।' मैंने कहा फर्माईए क्या प्रश्न है? प्रश्न का उत्तर यदि आता होगा तो दे दूंगा।' उन्होंने कहा कि 'मैं समझता कि भगवान हमारी इच्छाओं को पूरा करने में पूरी तरह नाकामयाब रहा है। क्योंकि हम बहुत सी इच्छायें करते हैं और हमारी मन की मन में ही रह जाती हैं। हम भगवान् से अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिये प्रार्थना भी करते हैं। पर फिर भी यह पूरी नहीं होतीं। तो क्यों मैं इस आधार पर यह नहीं कह सकता हूं कि भगवान् हमारी इच्छाएं पूरी करने में Miserably fail हो गया है। उनके शब्द थे। वह हमारी इच्छाएं पूरी करने में बुरी तरह नाकामयाब रहा है।

प्रश्न मैंने सुन लिया और इसके बाद मैंने कहा कि 'मैं आपके समझने के लिए एक उदाहरण देता हूं। मान लीजिए आप बाजार जा रहे हैं। आपका बच्चा आपकी उंगली पकड़े आपके साथ जा रहा है। उसने बाजार में कलमी बड़े देखे। कलमी बड़े बहुत जायकेदार होते हैं किन्तु तेल में बनाये जाते हैं। बच्चे ने आपसे कलमी बड़े दिलवाने के लिये कहा। आपने उसे मना कर दिया और कहा कि तुझे कूकरखांसी Hooping Cough है। यह बड़े तेल के हैं तुझे नुकसान करेंगे। इसलिये यह नहीं लेने। बच्चा चुप हो गया। आप थोड़ा और आगे बढ़े। लेकिन बच्चा पीछे की ओर ही देखता चल रहा है। आपसे फिर बोला पिताजी दो पैसे के तो दिलवा दो।

(क्रमशः)

काव्यायन

भारत के बच्चे

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

हमें देश प्राणों से प्यारा, हम भारत के बच्चे हैं!

वन्दे मातरम् मंत्र मिला है, हमें दुग्ध की घुट्टी में।
देशभक्ति की गन्ध घुली है, अन्न, वायु, जल, मिट्टी में।
ध्वजा-तिरंगा फहराते हम, वीर बहादुर सच्चे हैं!

भरत, हकीकत राय, भगत सिंह देशप्रेम सिखलाते हैं।
गाँधी, अम्बेडकर, सुभाष की, गाथा सादर गाते हैं।
सिंह सपूतों की दहाड़ सुन, दुश्मन खाते गच्चे हैं!

कभी नहीं कम होने देंगे, जन-गण-मन की शान को।
बाह्य और अन्तर खतरों से, आँच न आये आन को।
भले अभी हम नन्हें-मुन्ने, नहीं इरादे कच्चे हैं!

श्रम से और कला-कौशल से, उन्नत देश बनाना है।
तन-मन-धन अर्पित करके, अब सोया भाग्य जगाना है।
लायेंगे स्वर्णिम विहान हम, सारे जग से अच्छे हैं!

जीवन-लक्ष्य पुनीत हमारा, देश की सेवा करनी है।
अडिग हिमालय-सा बनके, माँ की पीड़ा हरनी है।
देशद्रोहियों की चालों के, अब उड़ने परखच्चे हैं!

हमें देश प्राणों से प्यारा, हम भारत के बच्चे हैं!

—117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-22

भइया पानी नहीं बहाओ!

❑रुद्र प्रकाश गुप्त 'सरस'

भइया पानी नहीं बहाओ, यह प्रसाद भगवान का।
लाभ उठाते तुम नाजायज, इस विकसित विज्ञान का।।

बूँद-बूँद पानी की कीमत, यह है जीवन दाता।
थोड़ी देर नहीं मिलता यदि, हमको रोना आता।।
दैनिक क्रिया-कलाप हमारे, पानी बिना न चलते।
पानी से ही इस धरती के, सारे पौधे पलते।।

पानी बिना न रह पायेगा, कोई जन्तु जहान का।

जल का दोहन हम करते हैं, सब मर्सिबल लगाकर।
नहरों का पानी कम करते, इधर-उधर फैलाकर।।
खुला छोड़ देते हम नल को, पानी बहता जाये।
क्यों न प्रकृति फिर हमें दंड दे, थप्पड़ जड़ समझाये।।

जल संरक्षण में प्रयोग हो, अब कुछ अपने ज्ञान का।।

धरती में वर्षा के जल को, जितना संभव भर लो।
घर पर और जहाँ हो संभव, यह प्रबंध तुम कर लो।।
सावधान रहकर करना है, हमको जल का खरचा।
गाँव-गाँव में नगर-नगर में, जल बचाव की चरचा।।

भारत का परिचय हो जाये, दुनिया में गुणवान का।।

—शिव सदन, मुरार नगर, औद्योगिक क्षेत्र, सण्डीला, हरदोई-241127

ऋतु वर्णन

श्रावण

❑रामा आर्य 'रमा'

हुई अषाढ़ी धूम से, आया सावन मास।
तिथि पर्वो के बीच में, सुख वैभव की आस।।

कजरी झूला गीत की, आयी 'रमा' बहार।
नर नारी सब मगन हैं, गायें गीत मल्हार।।

कहे पपीहा पिउ कहाँ, पंख फुलाए मोर।
झूमि झूमि पुरवा चले, ऋतु रानी का जोर।।

तीजे गुड़िया पंचमी, राखी का त्योहार।
भैया के सम्मान में, बहनों की मनुहार।।

उपाकर्म है श्रावणी, वैदिक ज्ञान विचार।
ऋषि कुल की यह रीति है, होता वेद प्रचार।।

('रमा सतसई' से)

—417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

नहीं चाहिये

❑डॉ. कैलाश निगम

धर्म व अधर्म में न
भेद जिसको हो ज्ञात
सत्य से परे हो
वह सार नहीं चाहिये।
धर्म-स्थलों की जो
पवित्रता को भंग करे
जनता को ऐसा
किरदार नहीं चाहिये।
द्वेष अनुशासन के
नाम से सिखाये हमें
ऐसा कोई घातक
विचार नहीं चाहिये।
देशद्रोहियों के चरणों में
रख दे जो शीश
ऐसी दीन-हीन
सरकार नहीं चाहिये।

—4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

पर्यावरण दिवस

❑राजाभइया गुप्ता 'राजाभ'

पर्यावरण सुखद रहे, विज्ञ जनों की चाह।
मिलकर सब जन चल पड़ें, निज हिस्से की राह।।

जल, जमीन, जंगल सभी, आज बहुत बेचैन।
परम्परा का निर्वहन, दे सकता है चैन।।

जिम्मेदारी ध्यान से, जो करते निर्वाह।
पर्यावरण सुधार की, दिखलाते शुभ राह।।

हरियाली कैसे बढ़े? हर जन करे विचार।
शुरू करे शुभ स्वयं से, हो अविलम्ब सुधार।।

जागरुक जन कर रहे, हितकारी व्यवहार।
भावी पीढ़ी अनुकरण, करे तो बेड़ा पार।।

भाव प्रदूषण सिर उठा, दूषित करे विचार।
सुसंस्कारों की पहल, है इसका उपचार।।

भावी संकट पूर्व ही, रखें सुदृढ़ विचार।
पर्यावरण सुधार हित, हों जन भागीदार।।

—616/227, बसंत विहार, निकट विश्वनाथ पार्क, लखनऊ-21

हर्ष-चतुष्पदी

यज्ञ कर्म है श्रेष्ठतम

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

यज्ञ स्वयमेव एक श्रेष्ठतम कर्म ऐसा,
जिससे सभी अन्य कर्म श्रेष्ठ बन जाते हैं।
यज्ञ करने से प्राप्त होता आरोग्य 'हर्ष'
घर घर यज्ञ की सुगंध शुभ पाते हैं।।

यज्ञ से है भावना मनुष्य की विराट् होती।
विश्व कल्याण हेतु मंगल मनाते हैं।
यज्ञ से ही सुखशान्ति प्राप्त करता है विश्व,
यज्ञ के तभी तो गुणगान सभी गाते हैं।।

—अक्षय मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

जब सूना सूना....

❑गोपालदास 'नीरज'

'जिन्दगी थक गई मौत चलती रही-
इस तरह तय हुआ साँस का यह सफर'
अमर पंक्ति के गायक श्री गोपालदास 'नीरज' की साँसों का सफर भले ही तय हो चुका हो, किन्तु उनके गीतों का सफर अभी तय नहीं हुआ है, वह अनन्त काल तक जारी रहेगा...कभी 'नन्दन' तो कभी 'चन्दन' बनकर वे हमारे बुलाने पर आते ही रहेंगे- जैसा कि अपने एक गीत में वर्षों पहले उन्होंने आश्वस्त किया था....

जब सूना सूना तुम्हें लगे जीवन अपना,
तुम मुझे बुलाना- मैं गुंजन बन आऊँगा!

जिस दिन तक बगिया में भौंरों की रहे भीड़,
उस दिन तक तुम मत आने देना मुझे पास,
जिस दिन तक बुलबुल गाती रहे बहारों को,
उस दिन तक मत पूछना कि मैं क्यों हूँ उदास,
लेकिन जिस दिन पथ पर सपनों की उड़े धूल,
तब मुझे बुलाना- मैं चन्दन बन आऊँगा!

जब गूँज रहा हो चाँद रात के खुले बाग में,
तब याद न करना इस कुटिया अँधियारी को,
मधुऋतु मधुबन में जब सिन्दूर लुटाती हो,
बिसरा देना तब इस विधवा फुलवारी को,
लेकिन आकर पतझार तुम्हें जब झकझोरे,
तब मुझे बुलाना- मैं सावन बन आऊँगा!

जब तक नर्गिस की पाँति नयन में शरमाये,
तब तक न समझना तुम इन आँखों की भाषा,
मुस्कायें अधरों पर जब तक फूले गुलाब,
तब तक न जानना तुम मैं हूँ कितना प्यासा,
पर जब कोई अंगार कपोलों को चूमे,
तब मुझे बुलाना- मैं चुम्बन बन आऊँगा!

हो मठ में जब तक गूँज शंख-घड़ियालों की,
मेरी पूजा तब तक तुम ठुकराते रहना,
गीतों के गजरों से जब तक तुम सजे रहो,
मेरे आँसू तब तक तुम तड़पाते रहना,
ढह जाये मठ पर जब शृंगार बिखर जाये,
तब मुझे बुलाना- मैं दर्शन बन आऊँगा!

जब प्यार लुटाने निकलो तुम संसार बीच,
मेरे अनाथ मन को तब याद नहीं आना,
वरदान बाँटने जाओ जब तुम दुनियाँ में,
मेरे भिक्षुक-सपनों पर खाक उड़ा जाना,
पर जब ठुकराओ प्यार किसी का तुम जग में,
तब मुझे बुलाना- मैं पाहन बन आऊँगा!

मेरा मन तो है कैद कफन के घूँघट में,
तन मरघट के हाथों का एक खिलौना है,
ये मेरी साँसे ही मेरी ज़ंजीरें हैं,
कुछ ज्ञात नहीं किस जगह मुझे कब सोना है,
इस पर भी यदि शृंगार तुम्हें मेरा भाये,
तो मुझे बुलाना- मैं दरपन बन आऊँगा!

('प्राण-गीत' से साभार)

बाल-शिक्षा

❑अजय कुमार पटेल

एक दो तीन चार पाँच छः सात आठ।
सबसे अच्छी तन्दुरुस्ती, सौ की सीधी बात।।

एक टमाटर रोज सवेरे जो कोईभी खाय,
उसके घर में बैद डाक्टर नहीं कभी भी आय।।

पाव लीटर दूध सवेरे, पाव लीटर शाम,
जरा सी कसरत लोहा बना देती इंसान।

आदमी का चोला यह मशीन है अजीब,
मिलती उसको जिसका होता बड़ा नसीब।

इसके कल पुर्जों को रखना सदा सँभाल,
'हेल्थ इज वेल्थ' मंत्र है सच्चा, रखना सदा खयाल।।

—संस्थापक-इंडिना कान्वेण्ट पब्लिक स्कूल, बेहटा, कुर्सी रोड, लखनऊ

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज ने छात्र-छात्राओं को स्कूल किट वितरित किये

कोटा, २ जुलाई। आर्य समाज जिला सभा कोटा ने सेवा कार्यों के तहत आज

कैथून क्षेत्र के बाडी भीमपुरा स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को स्कूल किट वितरित किए। स्कूल बैग, कॉपी, पेन व पेंसिल आदि के स्कूल किट पाकर छात्र-छात्राओं के चेहरे खिल उठे। वहाँ उपस्थित अभिभावकों ने भी प्रसन्नता व्यक्त की। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने उपस्थित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि गाँव के इस विद्यालय से शिक्षा ग्रहण और गाँव के विकास में योगदान देकर अपने क्षेत्र को संपन्न बनाएं। उन्होंने अभिभावकों को कहा कि अधिक से अधिक बच्चों को जो शिक्षा से वंचित रहे हैं उन्हें शिक्षा से जोड़ने का प्रयास करें।

अर्जुनदेव चड्ढा के साथ आर.सी.आर्य, लालचंद आर्य, वेदमित्र वैदिक, आदि आर्यजन विद्यालय पहुंचे। आर.सी.आर्य ने बच्चों को सामूहिक गायत्री मंत्र का पाठ कराया। लालचंद आर्य ने बच्चों को स्वच्छ रहने की बात कही। विद्यालय पहुंचने पर मैनेजमेंट कमेटी के अध्यक्ष श्री सत्यनारायण ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत कि। इस अवसर पर बच्चों ने राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गान सुनाये। अंत में विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती कनकलता सोनी ने आर्य समाज का आभार व्यक्त किया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

पतंजलि युवा स्वावलंबन शिविर सम्पन्न

कड़ी मेहनत से ही मिलती है सफलता - जी.डी.पटेल

'विपरीत परिस्थितियों, बाधाओं की परवाह किये बिना दृढ़ संकल्प के साथ

कड़ी मेहनत करने वाला व्यक्ति ही जीवन में सफलता अर्जित करता है क्योंकि कड़ी मेहनत का कोई विकल्प या शॉर्टकट नहीं होता।' यह बात मुख्य अतिथि श्री जी.डी.पटेल ने गायत्री शक्तिपीठ परिसर विज्ञान नगर, कोटा में पतंजलि योग समिति के तत्वावधान में २३ जून से चल रहे पांच दिवसीय युवा स्वावलंबन शिविर के समापन कार्यक्रम में कही। भारत स्वाभिमान पतंजलि योग समिति के जिला प्रभारी प्रदीप शर्मा ने यह जानकारी देते हुए बताया कि पतंजलि के अन्तर्गत युवा भारत द्वारा देश में युवा बेरोजगारों को रोजगार देने की दिशा में आगे बढ़ते हुए विश्व योग दिवस के पश्चात २३ जून को सेल्स क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिए जिला स्तरीय पांच दिवसीय युवा स्वावलंबन शिविर का आयोजन किया था। भोजन और आवासीय सुविधाओं युक्त इस शिविर में ४६ बेरोजगारों के लिए निःशुल्क प्रशिक्षण की व्यवस्था की गयी थी जिसमें नित्य प्रातः पांच बजे से शिविरार्थियों को तीन घंटे के गहन योगाभ्यास के प्रशिक्षण के उपरांत दोपहर और सायंकालीन सत्रों में सेल्स संबन्धी बारीकियां और गुर सिखाये गये।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने शिविरार्थियों के उज्जवल भविष्य और सफलता की कामन करते हुए युवाओं को नशा करने की बढ़ती प्रवृत्ति से बचने और इसे छोड़ने कस संकल्प दिलाया। मुख्य अतिथि द्वारा इस अवसर पर प्रशिक्षुओं को पतंजलि गिफ्ट हैंपर और टी शर्ट वितरित किए गए। कार्यक्रम समापन पर आगंतुकों का धन्यवाद और आभार राज्य महिला सह प्रभारी सुशीला कुर्मी ने व्यक्त किया। *(प्रदीप शर्मा, जिला प्रभारी)*

आर्य समाज विज्ञान नगर के दैनिक यज्ञ में शामिल हुए डॉ.जयदीप आर्य

कोटा, ८ जून। पतंजलि योगपीठ हरिद्वार से पधारे हुए मुख्य केन्द्रीय प्रभारी

डॉ.जयदीप आर्य कोटा के आर्य समाज विज्ञान नगर के दैनिक यज्ञ में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने पुरोहित मनोहर लाल वर्मा के ब्रह्मत्व में वेदमंत्रों के साथ आहुतियाँ प्रदान कर विश्व शांति एवं समृद्धि की कामना की। यज्ञ के उपरांत अपने सम्बोधन में उन्होंने शांति पाठ के मंत्र की व्याख्या करते हुए कहा कि परम पिता परमेश्वर द्वारा रचित द्यौलोक में, अंतरिक्ष में, पृथ्वी में, जल में, औषधियों में, वनस्पतियों में जो शांति व्याप्त है वही शांति हमारे जीवन में भी प्राप्त हो। जीवन में शांति की रसधारा बहती रहे, आनन्द के स्रोत प्रकट होते रहें।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि योग के माध्यम से जीवन में शांति पाई जा सकती है, क्योंकि शांति का मूल हमारे भीतर है जो परमपिता परमेश्वर है। योग हमें उस ईश्वर से जोड़ने का कार्य करता है।

इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा, आचार्य चंदन जी, जे.एस.दुबे, अरविन्द पाण्डेय, दिनेश शर्मा, श्रीमती अनीता आर्य, गायत्री दुबे एवं प्रदीप शर्मा उपस्थित थे। *(अरविन्द पाण्डेय)*

लखनऊ-समाचार

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक निर्वाचन

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ के वार्षिक निर्वाचन में दि.१५.०७.१८ को चुने गए पदाधिकारी-

श्री नवनीत निगम	प्रधान
श्रीमती स्नेह लता	उपप्रधान
डॉ.भानु प्रकाश आर्य	उपप्रधान
श्री सतीश चन्द्र बिसारिया	उपप्रधान
श्री प्रत्यूष रत्न पाण्डेय	उपप्रधान
श्री आनन्द चौधरी	उपप्रधान
श्री प्रबोध सागर जौहरी	मंत्री
श्री सन्तोष कुमार मिश्रा	संगठन मंत्री
श्रीमती आशा अग्रवाल	उपमंत्री
श्री रितेश रस्तोगी	उपमंत्री
श्री के. प्रसाद	उपमंत्री
श्री दिलीप कुमार आर्य	उपमंत्री
श्री यतेन्द्र सिंह	उपमंत्री
श्री राजीव बत्रा	कोषाध्यक्ष
श्री रमेश चन्द्र आर्य	सहकोषाध्यक्ष
श्री प्रेमशंकर मौर्य	पुस्तकालयाध्यक्ष
श्री अजय श्रीवास्तव (नरही)	सम्प्रेक्षक
श्री सर्वमित्र	अधिष्ठाता आर्य वीर दल

आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के लिए नामित प्रतिनिधि–सर्वश्री प्रबोध सगर जौहरी, नवीन सहगल, मोहन लाल अग्रवाल, विमल किशोर आर्य। *(प्रबोध सागर जौहरी, मंत्री)*

नगर आर्य समाज का वार्षिक निर्वाचन

नगर आर्य समाज, रकाबगंज की साधारण सभा की बैठक १७.०६.१८ को संपन्न हुई, जिसमें २०१८-१६ के लिए निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये-

ठा. मुरारी सिंह	प्रधान
श्री अरविन्द कुमार	उपप्रधान
श्री इकबाल शंकर श्रीवास्तव	उपप्रधान
श्रीमती मनोरमा वाजपेयी	उपप्रधान
श्रीमती राधा केसरवानी	महामंत्री
श्री रितेश रस्तोगी	मंत्री
श्री अंशूराज रस्तोगी	उपमंत्री
सुश्री सरोज	उपमंत्री
श्रीमती अनीता चौहान	उपमंत्री
श्री संजय कुमार	कोषाध्यक्ष
श्री विजय कुमार गुप्ता	उपकोषाध्यक्ष
श्री जयन्त प्रकाश	पुस्तकालयाध्यक्ष
श्रीमती गीता श्रीवस्तव	महिला अधिष्ठात्री
श्री दिनेश केसरवानी–अधिष्ठाता आ. वीर दल	
श्री ज्ञानानन्द	भण्डार प्रमुख

(रितेश रस्तोगी, मंत्री)

फैजाबाद-समाचार

विजयलक्ष्मी रस्तोगी स्मृति दिवस

८ जून, २०१८ रविवार का दिन अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स फैजाबाद में विजय लक्ष्मी स्मृति दिवस के रूप में मनाया गया।

आज के ही दिन पावन, पुनीत, प्रवीण, नवनीत की माताजी श्रीमती विजयलक्ष्मी का स्वर्गारोहण हुआ था। श्रीमती विजयलक्ष्मी जी आर्य लोक वार्ता के सुपरिचित एवं चर्चित लेखक कवि बाँके बिहारी 'हर्ष' की सहधर्मिणी थीं। आप उदारता, दानशीलता एवं धार्मिक वृत्ति के लिए जानी जाती थीं।

लखनऊ-समाचार

आर्य समाज आदर्श नगर

वेद प्रचार सप्ताह-आर्य समाज आदर्श नगर आलमबाग के तत्वावधान में वेद प्रचार सप्ताह ३०, ३१ अगस्त तथा १, २ सितम्बर- बृहस्पतिवार से रविवार का समारोह पूर्वक मनाया जायगा। इस वर्ष वेदोपदेश हेतु प्रख्यात वैदिक प्रवक्ता-अर्न्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध श्री आनन्द पुरुषार्थी (होशंगाबाद) तथा भजनोपदेशक श्री कुलदीप विद्यार्थी पधार रहे हैं। उभय सत्रों में प्रातःकाल एवं सायंकाल यज्ञ, भजन, प्रवचन हाते रहेंगे। रविवार को अंतिम दिन सदैव की भांति विशेष कार्यक्रम आयोजित होगा तथा ऋषि लंगर के साथ समारोह का समापन होगा। *(आत्म प्रकाश बत्रा)*

'धधकते पृष्ठ' काव्य का स्वागत

'धधकते पृष्ठ' काव्य का स्वागत-जुलाई के प्रथम रविवार को आर्य समाज आदर्श नगर के साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता ने सरयूबाग अयोध्या में बनने वाले ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्मारक के संबन्ध में जानकारी दी तथा अनुरोध किया कि स्मारक हेतु सर्वतोभावेन सहयोग करना प्रत्येक आर्य का पुनीत कर्तव्य है। डॉ.वेद प्रकाश आर्य के राष्ट्रप्रेम संबन्धी काव्य 'धधकते पृष्ठ' का स्वागत किया गया तथा समुचित सहयोग योगदान के साथ काव्य की प्रतियाँ प्रधान सम्पादक के हाथों से प्राप्त कीं। श्री रुद्र स्वरूप, मंत्री आर्य समाज ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा 'धधकते पृष्ठ' काव्य को घर घर पहुँचाने की अपील की।

आर्य समाज राजाजीपुरम्

वेद प्रचार सप्ताह-आर्य समाज राजाजीपुरम द्वारा १ अक्टूबर से ४ अक्टूबर २०१८ तक वेद प्रचार सप्ताह आयोजित होगा। पारिवारिक यज्ञ एवं विद्वानों के उपदेश तथा भजनोपदेशकों के भजन होंगे।

मनीषी जन्मदिवस-वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत २ अक्टूबर को विशेष आयोजन होगा जिसमें आर्य समाज के संरक्षक आचार्य आनन्द मनीषी का जन्म दिवस उनके आवास सी-१२७१ राजाजीपुरम में मनाया जायगा। इस अवसर पर यज्ञ के अतिरिक्त मनीषी जी को उनके जन्मदिवस पर शुभकामनाएँ अर्पित की जायेंगी।

वार्षिकोत्सव-आर्य समाज का वार्षिक उत्सव ५,६,७ अक्टूबर २०१८ को समारोहपूर्वक मनाया जायगा। प्रातःकाल एवं सायंकाल उभय सत्रों में यज्ञ तथा भजन प्रवचन, सम्मेलन इत्यादि अनेक कार्यक्रम आयोजित होंगे। वार्षिक उत्सव के विशिष्ट व्याख्याता के रूप में स्वामी यज्ञानंद (हरिद्वार) तथा आचार्य सत्येन्द्र (मुंबई) भजनोपदेशक पधार रहे हैं। क्षेत्र की जनता को अधिकाधिक संख्या में भाग लेकर आयोजन को सफल बनाना चाहिए।

श्राद्ध दिवस-प्रतिवर्ष की भांति जीवित माता, पिता, पितामह, पितामही, दादा-दानी, नाना-नानी इत्यादि को सम्मानित करने वाला पर्व श्राद्ध दिवस रविवार दिनांक ७ अक्टूबर को प्रातःकालीन सत्र में आयोजित होगा। इस शुभ अवसर से लाभ उठाने हेतु आर्यजनों को आर्य समाज के पदाधिकारियों, मंत्री, प्रधान तथा संरक्षक से सम्पर्क स्थापित करना अभीष्ट है। *(निरंजन सिंह, प्रधान)*

आर्य समाज इन्दिरा नगर

वेद प्रचार सप्ताह-आर्य समाज इन्दिरा नगर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का कार्यक्रम श्रावणी से श्रीकृष्णजन्माष्टमी तक २६ अगस्त से ४ सितम्बर तक मनाया जायगा। इस अवसर पर प्रख्यात विद्वान श्री सुरेश चन्द्र जोशी एवं श्रीमती रुक्मिणी आर्य जोशी को वेदोपदेश एवं भजनोपदेश हेतु आमंत्रित किया गया है। जन सामान्य से अनुरोध हे कि वे वेद प्रचार को आयोजनों में क्रिया रूप में भाग लेकर लाभ उठायें। *(डोरीलाल आर्य)*

कवि विभोर का 82वाँ जन्म दिवस

८ जुलाई। प्रतिष्ठा तथा काव्य कला संगम के संयुक्त तत्वावधान में कवि रामदेव लाल विभोर का ८२वाँ जन्म दिवस यू.पी.प्रेस क्लब में मनाया गया जिसमें कृति 'काव्याचार्य रामदेवलाल विभोर के विविध आयाम' का विमोचन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो.नेत्रपाल सिंह ने की तथा मुख्य अतिथि प्रो.हरिशंकर मिश्र तथा विशिष्ट अतिथि प्रो.कृष्णा जी श्रीवास्तव थे। कवि को डा.शिव भजन कमलेश, गौरीशंकर वैश्य विनम्र, देवकीनन्दन शांत तथा श्याम जी श्रीवास्तव ने काव्य में शुभकामनाएँ प्रदान कीं। विभोर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर एक वृत्तचित्र प्रदर्शित किया गया। इसके पश्चात् नरेन्द्र भूषण, ओम नीरव, रंजना दीवान, डा.मधुकर अस्थाना (सम्पादक कृति) ने कवि के विविध आयामों पर प्रकाश डाला। अतिथियों ने कवि को शुभकामनाएँ अर्पित करते हुए विचारपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किये। कार्यक्रम में अशोक पाण्डेय अशोक, कुमार तरल, शशांक पाण्डेय, संजय समर्थ, यमुना सिंह, आर.एन.श्रीवास्तव, शीलेन्द्र कुमार सिंह, नवीन कुमार शुक्ल, आवारा नवीन, कृपाशंकर विश्वास, विजय कुमार त्रिपाठी, सुनील कुमार वाजपेयी, डा.सत्यदेव पथिक, मृत्युंजय गुप्ता आदि की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन डा.शिवमंगलसिंह मंगल ने किया। *(गौरीशंकर वैश्य विनम्र)*

बाँदा-समाचार

शशि रस्तोगी नहीं रहीं

बाँदा की एकमात्र महिला, जो आजीवन अविवाहित रहीं, सुश्री शशि रस्तोगी का दि. ०६.०६.१८ को निधन हो गया। गुरुवार ७ जून २०१८ को आपका अंतिम संस्कार कर दिया गया।

सुश्री शशि रस्तोगी फैजाबाद अवध पुरी निवासी श्री बाँके बिहारी रस्तोगी 'हर्ष' की धर्मपत्नी स्व.विजयलक्ष्मी जी की बहन थीं। शशि रस्तोगी के निधन पर श्री हर्ष तथा समस्त पारिवारिक जनों ने हार्दिक शोक व्यक्त किया है।

नीरज श्रद्धांजलि

अपनी सरल, मधुर एवं कोटि कोटि हृदयों को छू लेने वाली शैली में गीतों का सृजन एवं गायन करने वाले स्वातंत्र्योत्तर भारत के सर्वाधिक ऊर्जावान् महाकवि गोपालदास 'नीरज' के निधन ने सभी को हिलाकर रख दिया। शोकाभिभूत साहित्यकारों एवं साहित्यिक संस्थाओं के शोक समाचार 'आर्य लोक वार्ता' को प्राप्त हो रहे हैं, उनमें से कुछ को यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है।

अनन्त पथ के अमर पथिक-युगकवि नीरज

गीत जगत के एकछत्र सम्राट युगकवि नीरज अनन्त पथ के पथिक बन गये हैं,

परन्तु अपने गीतों की अपार लोकप्रियता के कारण वह सदैव हमारे बीच अमर रहेंगे। मुझे गर्व है कि वह मेरे जनपद इटावा में जन्मे थे। वर्ष १९५५ में जब मैं एस.ए.वी.इन्टर कॉलेज, भर्थना का छात्र था, तब इटावा की नुमाइश में आयोजित कवि सम्मेलन में मैं उन्हें प्रथम बार सुना था। उन्होंने एटम बम की विभीषिका पर लिखी कविता ऐसे मनोयोग से सुनाई थी कि लम्बे समय तक मेरे मन-मानस पर छाई रही। हाल में उनके उ.प्र.भाषा संस्थान के अध्यक्ष के कार्यकाल में उनके निवास पर उनके स्नेहपूर्ण सान्निध्य का सुअवसर मिलता रहा था। उनका जाना सम्पूर्ण साहित्य-जगत की बड़ी क्षति है। उन्हें मेरी विनम्र श्रद्धांजलि!

-महेशचन्द्र द्विवेदी

पूर्व पुलिस महानिदेशक उ.प्र., १/१३७, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ

सुन्दरम संस्थान जानकीपुरम

सुन्दरम संस्थान की ओर से श्री नरेन्द्र भूषण के जानकीपुरम आवास पर

उनकी अध्यक्षता में माधव जी के संचालन में रवीन्द्र नाथ तिवारी एवं अन्य साहित्यकारों की उपस्थिति में दिवंगत श्री गोपाल दास नीरज को भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। उनके दुर्लभ संस्मरणों को साझा किया गया। सुन्दरम् के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र भूषण ने श्रद्धांजलि में कहा- नीरज जी ने हिन्दी काव्य एवं साहित्य का नेतृत्व किया। वे श्रेष्ठ गीतकार के साथ दार्शनिक चिन्तक भी थे। उनका चिन्तन निम्नांकित मुक्तक में देखते ही बनता है-

प्रश्न मेरे जन्म से अब तक निरुत्तर ही रहे,
शीश धुनने के लिए दो चार पत्थर ही रहे,
मृत्यु से आक्रान्त होकर सोचता हूँ आज मैं-
बहुत संभव है कि जग में कल न ईश्वर ही रहे!

अखिल भारतीय अगीत परिषद

अखिल भारतीय अगीत परिषद के तत्वावधान में श्री रंगनाथ मिश्र 'सत्य' की

अध्यक्षता एवं श्री रवीन्द्र नाथ तिवारी तथा कुमार तरल के संचालन में राजाजीपुरम् में दिवंगत कवि गोपाल दास नीरज को भावभीनी श्रद्धांजलि, उनकी कविताओं का पाठ एवं दो मिनट का मौन रखकर दी गई। अगीत परिषद के अध्यक्ष श्री रंगनाथ मिश्र 'सत्य' ने कहा कि गोपालदास नीरज आधुनिक युग में दिनकर के बाद में सबसे बड़े कवि थे जिन्होंने देश के लोक जीवन को प्रभावित किया और अपने गीतों से जन-जन के हृदयों पर अमिट छाप छोड़ी।

अखिल भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद

अखिल भारतीय भाषा प्रतिष्ठापन परिषद के संरक्षक डॉ.मोहनलाल अग्रवाल की अध्यक्षता में सम्पन्न गोष्ठी में महाकवि नीरज को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। राजेश प्रकाश शर्मा 'आग्नेय', वी.के.सक्सेना, धुरेन्द्र स्वरूप बिसारिया 'प्रभंजन', डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ', प्रो.विश्वम्भर शुक्ल, श्रीमती रामा आर्य 'रमा', आभा मिश्रा एवं प्रत्यूषरत्न पाण्डेय ने गोपालदास नीरज के महाप्रयाण पर अपने शोकोद्गार व्यक्त किये।

आर्य लोक वार्ता
21वें वर्ष का प्रवेशांक

'आर्य लोक वार्ता' के २१वें वर्ष का यह पहला अंक है। यह अंक विशेषकर गीत सम्राट गोपालदास 'नीरज' को समर्पित है। यह अंक आपको कैसा लगा- अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य ही अवगत करायें।

'आर्य लोक वार्ता' के सभी श्रेणियों के सहयोग कर्ताओं से मेरा विनम्र अनुरोध है कि वे अपनी सहयोग राशि निश्चित रूप से कार्यालय अथवा पत्र में पृष्ठ ८ पर छपे विवरण के अनुसार बैंक ऑफ बड़ौदा की किसी भी शाखा में नकद जमा कर हमें सूचित करने का कष्ट करें। आपके उत्तर की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

-प्रधान सम्पादक

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका&स्मारक निर्माणार्थ
कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य की मार्मिक अपील

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार में आयोजित आर्य महासम्मेलन में

कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा (पूर्व कार्यकर्ता प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली) ने सरयूबाग, अयोध्या में प्रस्तावित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के भव्य स्मारक के निर्माण की रूपरेखा पर प्रकाश डाला तथा स्मारक की उपयोगिता और औचित्य से सभी को परिचित कराया। इस महान् अभियान का समग्र आर्य हिन्दू जनता ने सर्वत्र स्वागत किया। आपने गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली के प्राण श्रद्धेय स्वामी प्रणवानन्द की प्रेरणा और योगदान की सराहना की। दानदाताओं का आह्वान करते हुए आपने कहा कि यह स्वर्णिम अवसर आपको मिला है कि आप अपने उदार सहयोग से युग की शिलाओं पर अपने हस्ताक्षर अंकित करायें और अक्षयकीर्ति का वरण करें।

(वेदभाष्य स्मारक न्यास की सदस्यता अथवा सहयोग हेतु कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, मो.नं. ६३३१८६६६१८ पर वार्ता अपेक्षित है। -सम्पादक)

बेजोड़ है अग्रलेख - दीनानाथ शास्त्री

ऋग्वेदभाष्य स्मारक न्यास के अग्रिम पंक्ति के प्रबंधकर्ता, अंग्रेजी भाषा के

चतुर्वेद भाष्यकर्ता स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती के सुयोग्य शिष्य पं.दीनानाथ शास्त्री ने जून १८ अंक में प्रकाशित 'आर्य लोक वार्ता' के अग्रलेख 'आर्यों का नया तीर्थ' की सराहना करते हुए कहा है कि यह सम्पादकीय बेजोड़ है, यदि सत्यार्थ प्रकाश की सृजन भूमि- उदयपुर में स्थित महाराणा के नवलखा महल में सत्यार्थ प्रकाश का भव्य स्मारक बन सकता है तो ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका रचनास्थली सरयूबाग, अयोध्या में ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भव्य स्मारक क्यों नहीं बन सकता है?

आपने आर्य जनता तथा दानवीर बन्धुओं से आगे बढ़कर इस स्मारक हेतु सहयोग देकर पुण्य यशलाभ प्राप्त करने की पुरजोर अपील की है।

शिवधर जी को पत्नीशोक

आर्य समाज गोमती नगर के कोषाध्यक्ष तथा आर्य समाज इन्दिरा नगर के पूर्व

मंत्री श्री शिवधर मौर्य की धर्मपत्नी श्रीमती मेवाती देवी (७१) अल्पकालिक बीमारी के बाद राम मनोहर लोहिया इंस्टीट्यूट में दि. ०४.०७.१८ को दिवंगत हो गईं। दिनांक ०६.०७.१८ को आपकी पुण्य स्मृति में शान्तियज्ञ १/४४, विक्रान्त खण्ड गोमती नगर में श्री मनोज कुमार मिश्र एवं प्रेमशंकर मौर्य के आचार्यत्व में सम्पन्न हुआ, जिसमें पारिवारिक जनों के अलावा आर्य समाज गोमती नगर एवं अन्य आर्य समाजों के भी प्रतिनिधि शामिल हुए।

बताते चलें कि मेवाती जी एक कुशल गृहिणी थीं, जिनके बलबूते श्री शिवधर मौर्य विद्युत विभाग के साथ ही आर्य समाज की सेवा लिए पर्याप्त समय देने में समर्थ हुए। आपके तीन पुत्र-डॉ.सुभाष, सन्तोष कुमार, विजयशंकर मौर्य व तीन पुत्रियाँ-श्रीमती सुमित्रा, सविता, सरिता (सभी स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त) हैं।

इस दुखद अवसर पर 'आर्य लोक वार्ता' की शोक संवेदनाएँ श्री शिवधर जी के साथ हैं। परमात्मा उनकी दिवंगता पत्नी को शान्ति, सद्गति तथा शोकसंतप्त परिवार को यह कष्ट सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

मगन बिहारी वर्मा दिवंगत

५३६क/८३६, त्रिवेणी नगर फेज-२ (संकट मोचन मंदिर के निकट) निवासी

मगन बिहारी वर्मा (८२) का १४.०७.१८ को निधन हो गया। स्व.वर्मा ने दूरसंचार विभाग से अवकाश ग्रहण किया था और वे जनसेवा में अपने जीवन के शेष क्षणों को व्यतीत कर रहे थे। महिला शक्ति मण्डल न्यास की सक्रिय सदस्या श्रीमती कनक वर्मा आपकी अनुजवधू हैं।

स्व.वर्मा की पुण्य स्मृति में शान्तिपाठ एवं यज्ञ डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में उनके आवास पर सम्पन्न हुआ; जिसमें समस्त पारिवारिकजनों तथा क्षेत्र के संभ्रान्त जनों ने भाग लिया। पत्नी प्रेमलता वर्मा एवं स्व.वर्मा के पुत्र संजय वर्मा अपनी पत्नी अनीता वर्ता के साथ यजमान आसन पर बैठे। अन्य स्थानों पर राजीव वर्मा, विनीता वर्मा, धनंजय वर्मा, प्रतिभा वर्मा, अजीता (पुत्री), कंचन, संदीप मौजूद थे। इसके अलावा नई पीढ़ी के बच्चों अपूर्वा, तनुश्री, अंशुमान, कुश, तनिष्क, निमिषा, आरुषी ने भी सोत्साह यज्ञ को देखा तथा आहुतियां देकर अपनी परिवार के प्रमुख को श्रद्धांजलि अर्पित की। स्व.वर्मा के अनुज श्री गोपाल वर्मा, श्रीमती कनक वर्मा एवं पारुल वर्मा ने यज्ञ की सम्पूर्ण व्यवस्था को संभाला। दो मिनट मौन रहकर दिवंगत को श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा स्व.वर्मा की परोपकार भावना की बार बार सराहना की गई।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-19/838, प्रथम तल, रिंगरोड, इन्दिरानगर, लखनऊ-226016
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9795445800

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी. प्रिंटेक

E-mail - aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	-	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	-	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	-	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	-	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है-

बैंक-बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक - आर्य लोक वार्ता
खाता सं. - 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक

श्री आनन्द कुमार आर्य, कोलकाता
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक

श्री अर्जुनदेव चड्ढा, कोटा
डॉ. रूपचन्द्र 'दीपक', लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
विश्वमित्र, एडवोकेट, लखनऊ
सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग

श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार

श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।